आज का विचार

विश्वास और प्रेम में एक ही समानता है, दोनों में से किसी को भी जबरदस्ती पैदा नहीं किया जा सकता है...

www.ambikavani.com

अम्बिकावाणी

संस्थापक : स्व. श्रीकिशन असावा एवं स्व. श्री गोपाल असावा ■ वर्ष-24 अंक-90 ■ पृष्ठ-8 ■ मूल्य 2.50 ■ प्रधान संपादक- महेन्द्र सिंह टुटेजा, ● प्रबंध संपादक-नरेन्द्र सिंह टुटेजा

रामचंद्र जायसवाल खान सुरक्षा समिति सदस्य नामित

रायपुर, सोमवार 2 जून , 2025

जय शाह के ट्रॉफी फोटोशूट के बाद पीएसजी की ऐतिहासिक जीत

पूरे उत्तर भारत में प्री मानसून का असर, अगले 4 दिन तक आंधी-बारिश की चेतावनी जारी

0 उत्तर भारत में प्री मानसून का असर 0 भारी बारिश और तूफान का अलर्ट 0 ४ जून ऐसे ही हालात रहने के आसार

नई दिल्ली : दिल्ली-एनसीआर समेत उत्तर भारत में मौसम का मिजाज बदल रहा है। अब कई राज्यों में बारिश हो रही है, जिसकी वजह से गर्मी के कहर से राहत मिली है। मौसम विभाग ने बताया है कि उत्तर पश्चिम भारत में अगले चार से पांच दिनों तक बारिश, आंधी तूफान का अलर्ट है। इसमें २ और ३ जून को तेज बारिश होगी। वहीं, पूर्वोत्तर के राज्यों में ३ जून तक भारी से बहुत भारी बारिश होने वाली है। २ जून को सब हिमालयी पश्चिम बंगाल में बहुत भारी बरसात का अलर्ट जारी किया गया है। आइए जानते हैं कैसा रहेगा

दिल्ली-नोएडा में ४ जून तक बारिश के आसार

दिल्ली और उसके आस-पास के इलाके जैसे नोएडा-एनसीआर में मौसम विभाग के मुताबिक, दिल्ली में २ जून से लेकर ४ जून तक बारिश होने के आसार हैं। इस दौरान तापमान में गिरावट देखने को भी मिल सकती है। आज दिल्ली में आंधी के साथ बारिश होने की संभावना है। इसके लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है। इस दौरान ४० से ५० की स्पीड से हवाएं चल सकती हैं। वहीं, २ जून को आसमान में बादल छाए रहेंगे। हालांकि २ जून को अभी कोई अलर्ट जारी नहीं किया गया है। इसके बाद २ जून से लेकर ४ जून तक लगातार ३ दिन आंधी तूफान के साथ बारिश होने की संभावना है।

यूपी में ५ जून तक बारिश की संभावना

मौसम विभाग के मुताबिक, बदलते मौसम और प्री मानसून के अनुसार मौसम विभाग ने अनुमान लगाया है कि उत्तर प्रदेश में पी मानसून एक्टिविटी जल्द ही शुरू हो सकती है हालांकि एक बात और सामने आ रही है वह यह की यूपी में १० से १२ दिन बाद मानसून की एंट्री हो सकती है। बताया जा रहा है कि मानसून भारत के करीब १८ राज्यों में दस्तक दे चुका है। वहीं, अब बंगाल की खाड़ी में बन रहा दबाव वाला क्षेत्र सागर द्वीप से होते हुए बांग्लादेश की ओर बढ़ रहा है। माना जा रहा है कि यही डिप्रेशन उत्तर भारत की ओर मानसून को धकेलने के बजाय विपरीत दिशा में खींच सकता है।

हरियाणा-राजस्थान में बारिश की फुहारें

हरियाणा में २ और ४ जून सभी जिलों में बारिश होने की संभावना है। २ जून को हरियाणा के सभी जिलों में २५ से ५० फीसदी तक बारिश हो सकती है। वहीं, ३ जून को सिरसा, भिवानी, फतेहाबाद, हिसार, चरखी दादरी, महेंद्रगढ़ और रेवाड़ी में ५० से ७५ फीसदी बारिश होने की संभावना है। इसके अलावा जींद, रोहतक, झज्जर, गुरुग्राम, फरीदाबाद, पलवल और मेवात में बारिश होने की २५ से ५० फीसदी तक संभावना है। बाकी अन्य जिलों में २५ फीसदी बारिश होने हो सकती है। वहीं, राजस्थान में मौसम विभाग की मानें तो अगले चार से पांच दिनों तक प्रदेश में भीषण गर्मी से राहत मिलने की संभावना है। दिन का तापमान ४५ डिग्री से नीचे ही रहेगा। साथ ही २ जून से एक नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो रहा है, जिसके चलते कई इलाकों में तेज आंधी, मेघगर्जन और बारिश देखने को मिल सकती है।

मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़ में होगी गरज-चमक

मध्य प्रदेश में मौसम का मिजाज बदला हुआ है। प्रदेश में जून की शुरूआत भी गरज-चमक और तेज हवाओं के साथ हो रही है। मौसम विभाग ने १ जून से ४ जून तक प्रदेश के २५ से अधिक जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट जारी किया है। वहीं, ७ से १० जून के बीच मानसून के दस्तक देने की संभावना है। वहीं, छत्तीसगढ़ में मौसम विभाग के अनुसार, प्रदेश के कुछ इलाकों में ४ से ५ जून तक गर्जन के साथ ही ४० से ५० किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने की संभावना है. हालांकि, अधिकतम तापमान में आज कोई खास बदलाव देखने को नहीं मिलेगा.

पहला कॉलम

नॉर्थ-ईस्ट में मूसलाधार बारिश का कहर, अब तक 25 लोगों की मौत; बाढ़-लैंडस्लाइड ने भी मचाई तबाही

गुवाहाटी/इम्फाल ,01 जून (ए)। असम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर सहित पूर्वोत्तर भारत के कई राज्यों में मूसलाधार मानसूनी बारिश ने तबाही मचा दी है। बीते दो दिनों से जारी भारी बारिश के कारण अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन से अब तक 25 लोगों की मौत हो चुकी है। प्रशासन द्वारा तेजी से राहत और बचाव कार्य चलाए जा रहे हैं। राज्य की राजधानी गुवाहाटी में भूस्खलन की चपेट में आकर कई मकान क्षतिग्रस्त हो गए। इस हादसे में पांच लोगों की जान चली गई, जिनमें एक ही परिवार के तीन सदस्य शामिल हैं। पहाडि?ों में लगातार बारिश के कारण मिट्टी ढीली हो गई, जिससे एक बड़ा हिस्सा खिसककर घरों पर आ गिरा। इसके अलावा गोलाघाट जिले में दो और लखीमपुर में एक व्यक्ति की बाढ़ में डूबने से मौत हो गई। चीन सीमा से सटे अरुणाचल प्रदेश में बाढ़ ने विकराल रूप धारण कर लिया है। एक वाहन बह जाने से सात लोगों की मौत हो गई, जबकि एक अन्य घटना में दो लोग डूब गए। राज्य में अब तक कुल 9 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। मिजोरम, त्रिपुरा और मेघालय में पिछले 24 घंटे के दौरान बारिश और भूस्खलन से 8 लोगों की जान चली गई। अधिकारियों के अनुसार, इन राज्यों में रुक-रुक कर तेज बारिश हो रही है,

कुछ अलग

क्रिकेटर रिंकू सिंह और सपा सांसद प्रिया सरोज 8 जून को करेंगे सगाई, लखनऊ में होगी रिंग सेरेमनी

लखनऊ ,01 जून(ए)। टीम इंडिया के युवा क्रिकेटर रिंकू सिंह और समाजवादी पार्टी (सपा) की युवा सांसद प्रिया सरोज जल्द ही विवाह के बंधन में बंधने जा रहे हैं। दोनों की सगाई 8 जून को लखनऊ के एक प्रतिष्ठित होटल में होने जा रही है, जहां परिवार के करीबी सदस्य और रिश्तेदार इस खास पल के साक्षी बनेंगे। प्रिया सरोज और रिंकू सिंह का रिश्ता इस साल जनवरी में तय हुआ था। दोनों का 'रोकाइ समारोह पहले ही संपन्न हो चुका है और अब उनकी रिंग सेरेमनी की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। प्रिया सरोज देश की सबसे युवा महिला सांसद हैं। उन्होंने 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश की मछलीशहर सीट से समाजवादी पार्टी के टिकट पर जीत दर्ज की थी। प्रिया ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी बीपी सरोज को 35,850 वोटों से हराया था। प्रिया का जन्म 23 नवंबर 1998 को वाराणसी में हुआ था। उन्होंने स्कूली शिक्षा नई दिल्ली के एयर फोर्स गोल्डन जुबली इंस्टीट्यूट से पूरी की। इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक और नोएडा स्थित एमिटी यूनिवर्सिटी से एलएलबी की डिग्री हासिल की। प्रिया के पिता तूफानी सरोज समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं, जो तीन बार लोकसभा सांसद रह चुके हैं

खरी-खरी

मिस वर्ल्ड 2025 ओपल सुचता ने खोला सफलता का राज, 'दो शब्दों' के दम पर जीता ताज

मुंबई ,01 जून(ए)। थाईलैंड की ओपल सुचाता चुआंगसरी ने मिस वर्ल्ड 2025 का ताज अपने नाम किया। उन्होंने अपनी जीत का मंत्र साझा करते हुए बताया कि धैर्य' और 'दृढ़ संकल्प' ही वो दो शब्द हैं, जिनके चलते वह सफलता हासिल कर पाई हैं।

इस साल मिस वर्ल्ड 2025 का आयोजन हैदराबाद के तेलंगाना में किया गया। ग्रैंड फिनाले में चुआंगसरी ने वाइट कलर का गाउन पहना था, जिस पर ओपल जैसे फूल बने हुए थे। चेक गणराज्य की मौजूदा मिस वर्ल्ड क्रिस्टीना पिस्जकोवा ने अपना ताज नई मिस वर्ल्ड को सौंपा। यह थाईलैंड की पहली बड़ी ब्यूटी पेजेंट जीत है। मिस वर्ल्ड का खिताब जीतने के बाद चुआंगसरी ने मीडिया से बात की। अपनी सफलता का राज बताते हुए उन्होंने मीडिया से कहा, हमेशा खुद पर भरोसा रखो। अपनी असली सोच और मान्यताओं पर डटे रहो। मैं आज यहां इसलिए हूं क्योंकि मैंने अपने फोकस को बनाए रखा और खुद पर भरोसा रखा। साथ ही, अपने आप से प्यार करना कभी मत भूलो। उन्होंने आगे कहा, यह हमेशा आसान नहीं होता, कभी-कभी बहुत थकावट होती है और हिम्मत टूट जाती है। लेकिन अगर आप हार नहीं मानेंगे, तो आप एक दिन मंजिल तक जरूर पहुंच ही जाएंगे। आपको बता दें कि मिस वर्ल्ड 2025 में दुनियाभर से करीब 108 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया था। भारत की ओर से मॉडल नंदिनी गुप्ता ने इसमें हिस्सा लिया। हालांकि, वे मिस वर्ल्ड 2025 के खिताब की दौड़ में टॉप-20 तक ही जगह बना पाई। मिस वर्ल्ड के फिनाले की होस्ट मिस वर्ल्ड 2016 रह चुकीं स्टेफनी डेल वैले ने की। उन्होंने इवेंट में पारंपरिक भारतीय लहंगा पहना था। इवेंट में जैकलीन फर्नांडीज और ईशान खट्टर ने भी प्रस्तुति दी। 72वें मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में जज के तौर पर सोनू सूद शामिल थे, उन्हें ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड भी दिया गया। भारत में अब तक तीन बार मिस वर्ल्ड की प्रतियोगिता आयोजित की जा चुकी है। अब तक सबसे ज्यादा खिताब जीतने वालों में भारत सबसे आगे है। भारत ने 6 बार ये खिताब जीता है। आखिरी बार इसे जीतने वाली भारत मानुषी छिल्लर थीं।

लगातार पैर पसार रहा है कोरोना, एक दिन में आए 685 नए मामले...3,395 के पार हुए एक्टिव केस

◆ लगातार बढ़ता जा रहा है कोरोना ◆एक दिन में आए ६८५ नए मामले ◆अब तक हुई २६ लोगों की मौत

नई दिल्ली । दुनियाभर में इन दिनों कोरोना के मामलों में बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। इससे विशेषज्ञों की चिंता बढ़ गई है। भारत में भी पिछले कुछ दिनों से कोविड के मामलों में बढ़ोत्तरी देखी गई है। कोरोना के कुल मामले ३,००० का आंकड़ा पार कर गए. एक ही दिन में, ये २,७१० से बढ़कर ३,३९५ हो गए, यानी ६८५ नए मामले सामने आए. जनवरी २०२५ से अब तक २६ लोगों की मौत हो चुकी है, जिसमें दिल्ली, कर्नाटक, केरल और उत्तर प्रदेश में हाल ही में हुई चार नई मौतें भी शामिल हैं.

एक ही दिन में बढ़े ६८५ मामले पिछले दिन ३१ मई, २०२५ को भारत में कुल एक्टिव केस ३,३९५ थे। एक दिन पहले से ६८५ नए मामले सामने आए थे यानि ३० मई को २,७१० मामले थे। यह जानकारी ३१ मई २०२५ तक की है. इसके हिसाब से पिछले एक दिन में ३० मई से ३१ मई के बीच ६८५ नए कोरोना के मामले बढ़े हैं। पिछले ५ दिनों में सबसे बड़ी वृद्धि ३० मई से ३१ मई के बीच ६८५ मामले और २९ मई से ३० मई के बीच ५११ मामले देखी गई है। २७ मई को भी एक महत्वपूर्ण उछाल था जब सक्रिय मामले १,०१० तक पहुंच गए थे।

किस राज्य में कितने मामले ?

केरल- १,३३६
महाराष्ट्र- ४६७
दिल्ली- ३७५
गुजरात- २६५
कर्नाटक- २३४
पश्चिम बंगाल- २०५
तमिलनाडु- १८५
उत्तर प्रदेश- ११७
राजस्थान- ६०
पुडुचेरी- ४१
हरियाणा- २६
मध्य प्रदेश- १६
झारखंड- ६
पंजाब- ५

दिल्ली, कर्नाटक, केरल और उत्तर प्रदेश में ४ नई मौतें

कोविड १९ से पिछले २४ घंटे में ४ मौते हुई हैं, जिसमें दिल्ली, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश में एक-एक मौत हुई है। विशेषज्ञों के मुताबिक भारत में ह्क्क.१.८.१ और रुस्न.७ वेरिएंट्स के कारण मामलों में वृद्धि हो रही है, इनसे मौत के मामले बढ़ रहे हैं। दिल्ली: ७१ साल के एक बुजुर्ग की मौत हो गई. उन्हें निमोनिया, सेप्टिक शॉक (गंभीर संक्रमण) और किडनी फेलियर जैसी कई गंभीर समस्याएं थीं।

राजस्थान में एनआईए की बड़ी कार्रवाई : पाक जासूसी नेटवर्क से जुड़े संदिग्ध के ठिकाने पर छापा

जयपुर ,01 जून(ए)। पाकिस्तान समर्थित जासूसी नेटवर्क को लेकर राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने राजस्थान में बड़ी कार्रवाई की। एनआईए की टीम ने राज्य के एक अहम ठिकाने पर छापेमारी कर अहम दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक सबूत जब्त किए हैं। यह कार्रवाई पाकिस्तान इंटेलिजेंस ऑपरेटिव्स से जुड़े संदिग्धों की भूमिका की जांच के तहत की गई है।

सूत्रों के मुताबिक, एनआईए को इनपुट मिला था कि राजस्थान में कुछ व्यक्ति पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी से संपर्क में हैं और गोपनीय जानकारी साझा कर रहे हैं। इस आधार पर जयपुर सहित अन्य स्थानों पर छापा मारा गया। कार्रवाई के दौरान टीम को कई डिजिटल डिवाइस, संदिग्ध फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन से जुड़े कागजात और अन्य आपत्तिजनक सामग्री हाथ लगी है।

एनआईए की जांच में सामने आया है कि संदिग्धों को पाकिस्तान से हवाला के जरिये फंडिंग हो रही थी और वे भारत की सामरिक जानकारियां लीक कर रहे थे। यह जासूसी नेटवर्क 2023 से सक्रिय बताया जा रहा है, जिसकी कड़ी राजस्थान से भी जुड़ती दिख रही है।

एनआईए पहले ही इस केस को गंभीर मानते हुए आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम 1923 और यूएपीए एक्ट 1967 सहित अन्य धाराओं के तहत दर्ज कर चुकी है। राजस्थान में की गई कार्रवाई को जांच की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

पाक जासूसी केस में 8 राज्यों के 15 ठिकानों पर छापेमारी

पाकिस्तान से जुड़े जासूसी मामले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (ह्द्ब) ने देश के आठ राज्यों में 15 स्थानों पर एक साथ बड़ी छापेमारी की। यह कार्रवाई पाकिस्तान इंटेलिजेंस ऑपरेटिव्स (क्कढ्ढह्रह्य) से जुड़े संदिग्धों के खिलाफ की गई।

एनआईए ने जिन राज्यों में छापे मारे उनमें दिल्ली, महाराष्ट्र (मुंबई), हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, असम और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। कार्रवाई के दौरान टीमों ने संदिग्धों के ठिकानों से कई इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस, संवेदनशील वित्तीय दस्तावेज और अन्य आपत्तिजनक सामग्री जब्त की है। ये सभी सबूत पाकिस्तान के इशारे पर भारत में चल रहे जासूसी नेटवर्क की जांच के तहत खंगाले जा रहे हैं।

जांच में सामने आया है कि जिन लोगों के यहां छापे मारे गए, उनके पाकिस्तान स्थित जासूसी नेटवर्क से सीधे संपर्क थे। यह भी पता चला है कि इन लोगों को भारत में जासूसी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए वित्तीय मदद मिल रही थी।

एनआईए ने इस केस (12/2025/) को 20 मई को दर्ज किया था। इसकी शुरूआत उस आरोपी की गिरफ्तारी से हुई थी, जो 2023 से ही क्क्ढ्ढह्रह्य के साथ मिलकर संवेदनशील सूचनाएं साझा कर रहा था। बदले में उसे भारत के विभिन्न राज्यों में हवाला के जरिए पैसे मिल रहे थे।

तेज डायग्नोस्टिक / ब्लड बैंक (सेंटर)
माता राजरानी मेमोरियल MRM हॉस्पिटल
बाबूपारा, जोड़ा तालाब के सामने अम्बिकापुर
आयुष्मान योजना द्वारा भर्ती, सर्जरी, उपचार एवं जॉच की सम्पूर्ण सुविधा उपलब्ध
दर्द के इलाज :-
. सुईनुमा उपकरण / दूरबिन द्वारा स्लिप डिस्क को निकालना
. स्लिप डिस्क / साइटिका का ओजोन द्वारा इलाज
. RFA मशीन एवं सुईनुमा उपकरण द्वारा साइटिका एवं कमर दर्द का इलाज
. कमर दर्द, गर्दन, पीठ का दर्द एवं हाथ का दर्द
. जोड़ों का दर्द, टेनिस एल्बो, एड़ी का दर्द
. दर्द की नसों को पहचान कर उसका इलाज
. (PLDD) लेजर मशीन द्वारा स्लिप डिस्क का इलाज
. Burger Disease कैंसर का दर्द CRPS
08 जून 2025, माह के दूसरे रविवार
डॉ. बी. मिंज
MBBS,MD, FIPM (Fellowship inPain Management) Interventional Pain Physician
Trained in Advance Pain Management Procedure From
Balaji Action Hospital, Delhi Daradia Pain Management Centere, Kolkata
अग्रिम पंजीयन हेतु सम्पर्क करें
07774222555,9425583780,9826183780, 8224007799, 8718003300, 6262639090
आयुष्मान योजना द्वारा भर्ती,सर्जरी, उपचार एवं जॉच की सुविधा उपलब्ध

पहला कालम

अंतर्राष्ट्रीय साइकिल दिवस के अवसर पर डीएवी विद्यालय में साइकिल रैली का आयोजन

बिश्रामपुर(अम्बिकावाणी समाचार)।
भारतीय खेल प्राधिकरण, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, नई दिल्ली के तत्वाधान में फिट इंडिया अभियान के तहत जन-सामान्य में स्वास्थ्य जागरूकता विकसित करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय साइकिल दिवस के अवसर पर डीएवी विद्यालय में साायकिल रैली का आयोजन प्राचार्य एच के पाठक के मार्गदर्शन व नेतृत्व में किया गया । आयोजन के मुख्य अतिथि विजय प्रसाद स्टॉफ ऑफिसर विद्युत यांत्रिकी एसईसीएल बिश्रामपुर क्षेत्र थे। अन्य अतिथियों में एच के .तिवारी, प्रबंधक, मानव संसाधन एसईसीएल बिश्रामपुर क्षेत्र, राजेश यादव, पूर्व अध्यक्ष, नगर पंचायत बिश्रामपुर दीपेंद्र सिंह चौहान, नगर पंचायत उपाध्यक्ष बिश्रामपुर थे।आयोजन में विद्यालय के सात की संख्या में बच्चों ने भागीदारी की।

विद्यालय प्राचार्य एच के पाठक ने अपने उद्बोधन में कहा कि साइकिल रैली का उद्देश्य मनोविनोद के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक रूप से शरीर को स्वस्थ बनाए रखना है और लोगो में स्वास्थ्य चेतना विकसित कर स्वस्थ समाज एवं मजबूत राष्ट्र का निर्माण करना है मुख्य अतिथि विजय प्रसाद ने आयोजन की सराहना कर कहा कि साइकिल चलाने से शरीर स्वस्थ रहता है इसके कई फायदे हैं ।ये जीरो पॉल्यूशन में भी मददगार है ।हम सभी को रोज कम से कम आधा घंटा साइक्लिंग करनी चाहिए ।विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष एवं क्षेत्र के महाप्रबंधक डॉ. संजय सिंह ने समस्त विद्यालय परिवार को अंतर्राष्ट्रीय साइकिल दिवस की शुभकामनाएं दी। आयोजन को सफल बनाने में विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाएं एवं स्टॉफ इस दौरान सक्रिय रह आयोजन संपन्न कराया।

रामचंद्र जायसवाल खान सुरक्षा समिति सदस्य नामित

बिश्रामपुर(अम्बिकावाणी समाचार)। कोयला मजदूर सभा (एचएमएस) के महामंत्री ने कुमदा सात आठ खदान के फोरमैन रामचंद्र जायसवाल को दिनेश पोखरियाल की जगह संगठन से खान सुरक्षा समिति बिश्रामपुर क्षेत्र का सदस्य मनोनीत किया है।रामचंद्र जायसवाल सभा का प्रतिनिधित्व करेंगे और सभा ने उन्हें आवश्यक निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया है।महामंत्री ने महाप्रबंधक बिश्रामपुर क्षेत्र को पत्र लिख इस नियुक्ति से अवगत कराया है।

श्रीकोट में समाधान शिविर का हुआ आयोजन, क्षेत्र की जनता के हित के लिए शासन-प्रशासन प्रतिबद्ध - सामरी विधायक

बलरामपुर (अम्बिकावाणी समाचार)।
शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने एवं सुशासन के संकल्प को साकार करने उद्देश्य से सुशासन तिहार अंतर्गत समाधान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के आज अंतिम कड़ी में विकासखण्ड कुसमी के ग्राम पंचायत श्रीकोट में समाधान शिविर आयोजित हुआ।

शिविर में सामरी विधायक श्रीमती उद्धेश्वरी पैकरा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती हिरामुनी निकुंज के साथ क्षेत्र के जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। शिविर में बड़ी संख्या ग्रामीणजन पहुंच कर अपने आवेदनों के संबंध में जानकारी ली।

विधायक श्रीमती पैकरा एवं जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती निकुंज के साथ जनप्रतिनिधियों ने समाधान शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का अवलोकन करते हुए प्राप्त आवेदनों के निराकरण की स्थिति जानी। साथ ही शिविर स्थल पर आज प्राप्त हुए आवेदनों का गुणवत्तापूर्ण निराकरण करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने क्षेत्र

में बिजली की समस्या को दूर करने के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी दिए। इस अवसर पर सामरी विधायक श्रीमती पैकरा ने संबोधित करते हुए कहा कि समाधान शिविर का अंतिम दिन है उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के मंशानुरूप जन जन की मांग, समस्या और शिकायत के निराकरण के लिए ०८ अप्रैल से प्रशासनिक अमला लगा रहा। और उनके द्वारा तत्परता से कार्य करते हुए आवेदनों का निराकरण किया गया। उन्होंने बताया कि इस शिविर में श्रीकोट क्लस्टर के अंतर्गत १० ग्राम के लोग शामिल हुए है इस क्लस्टर अंतर्गत १८७९ आवेदन प्राप्त हुआ था जिसका शतप्रतिशत निराकरण किया गया है। विधायक श्रीमती पैकरा ने कहा कि मुख्यमंत्री के मंशानुरूप आप लोगों की समस्या का समाधान किया गया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में पक्के आवास से वंचित ग्रामीण परिवारों के लिए १८ लाख आवास स्वीकृत किया गया है।पिछले महीने आवास का सर्वे किया गया जिसमें सभी छुटे पात्र हितग्राहियो का आवास से लाभान्वित किया जाएगा। बेहतर सुविधा की लिए क्षेत्र में कई सड़क निर्माण का कार्य जारी है क्षेत्रवासियों को जल्द ही बेहतर आवागमन की सुविधा मिलेगी। क्षेत्र में सिंचाई की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए बांध और नहर का निर्माण जारी है। शासन की जनहितैषी योजनाओं से किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है। राशन कार्ड धारियों को निशुल्क राशन प्रदान किया जा रहा है। ऐसे ही क्षेत्र की जनता के हित के लिए शासन-प्रशासन प्रतिबद्ध है।

सुशासन तिहार के तीसरे चरण में श्रीकोट समाधान शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा विभागीय योजनाओं की जानकारी साझा की गई। साथ ही पात्रतानुसार हितग्राहियों को योजनाओं को लाभ लेने प्रेरित किया गया। कृषि विभाग अंतर्गत किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड की जानकारी दी गई , जिसके माध्यम से वे अनेक योजनाओं का लाभ ले पाएंगे। किसानों को फसलों में उपयोग के लिए खाद, धान-बीज एवं खाद भंडारण के संबंध में जानकारी दी गई ताकि किसान अपनी उपयोग अनुसार उठाव कर सके। खाद्य विभाग द्वारा सार्वजनिक वितरण प्रणाली योजना अंतर्गत वितरण की जाने वाली सामग्री के बारे में बताया गया। शिविर में जानकारी दी गई कि जिनका राशन कार्ड नहीं बना है उनका राशन कार्ड किस तरह बनाया जाए। स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयुष्मान कार्ड, वय वंदन कार्ड के बनाने की प्रक्रिया एवं मिलने लाभ के बारे में जानकारी दी गई कि कार्ड बन जाने से गंभीर बीमारियों का नि:शुल्क ईलाज करवा सकते हैं। इसके साथ ही अन्य विभागों द्वारा विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई।

उपस्थित जनप्रतिनिधियों ने १० महिलाओं की गोद भराई की रस्म व ०६ बच्चों का अन्नप्राशन कराया। साथ अहिल्या देवी होल्कर की ३०० जयंती के अवसर पर ०६ स्वच्छताग्रही दीदियों को शाल एव श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

शिविर में ३० लोगों को राशन कार्ड का वितरण, १८ समूह की दीदीयों को लखपति सम्मान प्रमाणपत्र, स्वास्थ्य विभाग द्वारा ०२ हितग्राहियों को आयुष्मान कार्ड वितरण, श्रम विभाग द्वारा ०४ हितग्राहियों को श्रम कार्ड व ०६ हितग्राहियो को जावकार्ड तथा ०२ हितग्राहियो को प्रधानमंत्री आवास की चाबी सौंपी गई।

शिविर में जनपद अध्यक्ष कुसमी श्री बसंती भगत, उपाध्यक्ष श्री अशोक सोनी, जनपद सदस्य, गणमान्य नागरिक, स्थानीय जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारी-कर्मचारीगण एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन मौजूद रहे।

मोर गांव मोर पानी महाअभियानः लुण्ड्रा जनपद में जल संरक्षण बना जन आंदोलन

अम्बिकापुर (अम्बिकावाणी समाचार)। मोर गांव मोर पानी महाअभियान के अंतर्गत जिले भर में जल संरक्षण और जल संवर्धन को लेकर व्यापक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कलेक्टर श्री विलास भोस्कर के निर्देशन एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विनय कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन में सभी ग्राम पंचायतों में कैच द रेनच् अभियान के तहत वर्षा जल संचयन के विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। इसका उद्देश्य भूजल स्तर में वृद्धि करना है। जनपद पंचायत लुण्ड्रा अंतर्गत ग्राम पंचायत बुलंगा, डडगांव, बटवाही, और उदारी में

सरपंच, उप सरपंच, सचिव एवं जनप्रतिनिधियों के नेतृत्व में आमजनों की भागीदारी से नाली निर्माण, अमृत सरोवर के निर्माण तथा जल स्त्रोतों की साफ-सफाई जैसे कार्य किए गए। इस अभियान के अंतर्गत दीवार लेखन, नारा लेखन, जन रैली, जल शपथ और श्रमदान जैसे विविध कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया। ग्रामीणों ने च्जल है तो कल हैच् जैसे नारों के साथ जल स्त्रोतों के संरक्षण का संदेश दिया और जल बचाने का सामूहिक संकल्प लिया। इस अवसर पर महिला स्व-सहायता समूहों और मनरेगा श्रमिकों ने भी सक्रिय सहभागिता निभाई। उन्होंने वर्षा जल संग्रहण, पानी की बबादीं रोकने और जल स्त्रोतों को प्रदूषण से बचाने का संकल्प लिया। इसके साथ ही वृक्षारोपण और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देकर इस अभियान को एक जन आंदोलन का रूप देने की दिशा में कदम बढ़ाए जा रहे हैं।मोर गांव मोर पानी अभियान ग्रामीणों की सहभागिता से जल संरक्षण की दिशा में एक मजबूत पहल बनकर उभर रहा है, जो आने वाले समय में जिले के जल संसाधनों को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभाएगा।

केशवनगर में स्वास्थ्य कार्यकर्ता के यहां पांच लाख के जेवरात व नगदी ले गए चोर

बिश्रामपुर(अम्बिकावाणी समाचार)।
थाना क्षेत्र में एक के बाद एक चोरी की घटनाओं ने पुलिस सहित आमजनों की नींद हराम कर रखी है।पिछले दिनों एसईसीएल बिश्रामपुर के केतकी खदान के ओवर मैन अरुण पांडेय के वन सी कॉलोनी स्थित ३६ नंबर आवास का ताला तोड़ लाखों के जेवरात व नगदी रकम पार कर दिया था वहीं चार दिनों पूर्व गौरीशंकर मंदिर का दान पेटी चोर दिनदहाड़े उठा ले गए थे।अब चोरों ने शनिवार ३१ मई को स्वास्थ्य कार्यकर्ता के केशवनगर स्थित आवास का ताला तोड़कर आलमारी में रखा ७५००० रु नगदी समेत चार लाख से अधिक के सोने चांदी के जेवरात ले भागे।पुलिस में दर्ज कराए रिपोर्ट में स्वास्थ्य कार्यकर्ता शिखा बछार पति दीपांकर सरकार ४७ वर्ष ने बताया कि वह स्वास्थ्य कार्यकर्ता के पद पर कार्यरत है और केशवनगर स्थित पुराने पंचायत भवन में निवासरत है,शनिवार ३१ मई को वह अपने आवास में ताला लगाकर पड़ोसी शोभित पनिका को देखरेख करने कह अपने घर सिलफिली गई हुई थी ,तभी रात दस बजे उसने उसे घर में चोरी हो जाने की जानकारी दी जिस पर तत्काल वापस आकर देखा तो पाया कि घर का ताला टूटा है और तीन आलमारियों में दो खुले हैं और एक का लॉक टूटा है जिसमें उसका सोने का चैन,एक जोड़ी कान का टप,सोने की दो अंगूठी,सोने का मंगलसूत्र,दो लॉकेट सोने का,चार जोड़ी पायल नगदी रकम पचहत्तर हजार गायब है।पुलिस ने मामले में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ धारा ३०५(ए),३३१(४)बीएनएस के तहत केस दर्ज कर मामले को जांच में लिया है

बस्तर के पूर्व केन्द्रीय मंत्री नेताम नागपुर में आरएसएस के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि होंगे

जगदलपुर। बस्तर संभाग के कांकेर से पांच बार के सांसद एवं इंदिरा गांधी और पीवी नरसिम्हा राव की सरकार में मंत्री रह चुके, पूर्व केन्द्रीय मंत्री रहे आदिवासी नेता अरविंद नेताम उम्र 82 वर्ष ने बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा 5 जून को नागपुर में अपने कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बनाना उनका बड़प्पन है, और मेरा सौभाग्य है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार अच्छे हैं, पर मैं उग्र के इस पड़ाव में संघ में शामिल होने नहीं, मैं देश के आदिवासी राज्यों की बात रखने जा रहा हूं। इस कार्यक्रम को मोहन भागवत सम्बोधित करेंगे।

अरविंद नेताम ने रविवार को बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता विकास वर्ग द्वितीय के समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में आगामी 5 जून को नागपुर में होने वाले इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में जल-जंगल-जमीन, धर्मांतरण, औद्योगिक नीति को लेकर अपनी बात रखेंगे। हमारी पुरानी मांग आदिवासी समुदाय के धर्मकोड की मांग को भी रखेंगे, क्योंकि जनगणना में हिंदु लिखाया जाता है।

उन्होने कहा कि आदिवासी इलाकों में बड़े पैमाने पर औद्योगिकरण किया जा रहा है, जिससे बदलाव तो आयेगा, लेकिन बस्तर के आदिवासी इलाके के लोग कहां जायेंगें पता नहीं चलेगा, क्योंकि औद्योगिकरण से बाहरी लोगों का प्रवेश अधिक होगा। श्री नेताम ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ राष्ट्रहित और आदिवासी हित में काम करने वाला एकमात्र संगठन है। मगर भारतीय जनता पार्टी के विचारधारा के कारण आदिवासियों के बीच में खाई बड़ी है, जिसे पाटने की जरूरत है। उन्होंने संघ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम में उन्हें बुलाया जाना मेरा सौभाग्य है और इसके लिए मैं आभारी हूं, परंतु इस उम्र के इस पड़ाव में संघ में शामिल होना नामुमकिन है।

तीरथगढ़ वाटरफॉल से नीचे गिरा नाबालिक, कई घंटे बाद शव बरामद

जगदलपुर। जिले के तीरथगढ़ वाटरफॉल में रविवार सुबह विशाखापत्तनम से आये एक परिवार का नाबालिक मेरीवा साईं पवन सात्विक फोटो व वीडियो बनाने के दौरान ऊपर से नीचे कुंड में जा गिरा। हादसे के तत्काल बाद परिवार के कुछ लोगों ने पानी मे छलांग लगाए, लेकिन जब तक नाबालिक डूब चुका था, इसकी जानकारी दरभा पुलिस से लेकर एसडीआरएफ की टीम को दिया गया। घटना के कई घंटे बाद नाबालिग का शव बरामद कर लिया गया है। दरभा थाना पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार आज सुबह विशाखापत्तनम से एक परिवार जिसमें 20 से 25 लोग पर्यटन स्थल तीरथगढ़ वाटरफॉल घूमने के लिए आये हुए थे। इस दौरान परिवार के लोग तीरथगढ़ वाटरफॉल के पास फोटो, वीडियो बना रहे थे, इसी दौरान नाबालिक बालक मेरीवा साईं पवन सात्विक 17 वर्ष अपने फोन को लेकर झरने के ऊपर चढ़कर फोटो व वीडियो बनाने लगा, जहां अचानक उसका पैर फिसलने से ऊपर से सीधा कुंड में जा गिरा।

बता दे कि तीरथगढ़ वाटरफॉल के पत्थर में लगी कई के फिसलन को नजर अंदाज कर फोटो-विडियों बनाने में इतना खोते हैं, जिससे अक्सर इस तरह की जानलेवा घटनाएं होती है। वहीं यहां पर सुरक्षा के कोई उपाय मौजूद नही है। स्थानिय लोगों के द्वारा मना करने के बाद भी नही समझते है और अपनी जान गवा देते है। इससे पूर्व आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले से आये एक छात्र की भी इसी तरह गहरे पानी मे जाने से मौत हो चुकी है, वही इसी तीरथगढ़ वाटरफॉल के ऊपर पति पत्नी बैठकर बात करने के दौरान अचानक से महिला नीचे गिर गई थी, जिससे उसकी मौत हो गई थी, वहीं बरसात के समय एक युवाओं का ग्रुप घूमने के लिए आया हुआ था, अचानक से पानी के बढ़ जाने से पूरे लोग रात भर पेड़ में बैठकर अपनी जान बचाये थे, ऐसे कई मामले है जिसमे युवाओं ने सिर्फ अपने एक छोटी सी लापरवाही के कारण अपनी जान गवा चुके है।

पश्चिम बंगाल पुलिस ने इंस्टाग्राम इंफ़्लुएंसर को किया गिरफ़्तार, बीजेपी और पवन कल्याण क्या बोले

नई दिल्ली।
पश्चिम बंगाल पुलिस ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के मुद्दे पर एक समुदाय विशेष की धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाली सोशल मीडिया पोस्ट के आरोप में २२ साल की लॉ स्टूडेंट और इंस्टाग्राम इंफ़्लुएंसर शर्मिष्ठा पनोली को गिरफ़्तार कर लिया है.कोलकाता के गार्डनरीच थाने की पुलिस ने उन्हें गुरुग्राम से गिरफ़्तार किया है. कोलकाता पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इसकी पुष्टि की है.कोलकाता पुलिस के सूत्रों ने बीबीसी के सहयोगी पत्रकार प्रभाकर मणि तिवारी को बताया कि श्शर्मिष्ठा ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर बॉलीवुड एक्टर्स की चुप्पी को लेकर एक वीडियो अपलोड किया था, इसी दौरान उन्होंने एक धर्म विशेष पर आपत्तिजनक टिप्पणी भी की थी.शर्मिष्ठा पनोली को गुरुग्राम की अदालत में पेश करने के बाद उन्हें ट्रांजिट रिमांड पर कोलकाता लाकर शनिवार को अलीपुर कोर्ट में पेश किया गया.कोर्ट ने शर्मिष्ठा को १३ जून तक के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया है.शर्मिष्ठा के वकील का कहना है कि इस गिरफ़्तारी के खिलाफ उन्होंने अदालत में जमानत याचिका दायर की है. उन्होंने ये भी बताया कि शर्मिष्ठा का मोबाइल फोन और लैपटॉप जब्त हो चुका है.समाचार एजेंसी एएनआई से बात करते हुए वकील शमीमुद्दीन ने कहा, हमने अदालत के सामने जमानत याचिका पेश करते हुए बताया है कि अभियोजन पक्ष ने जिन वस्तुओं के कथित तौर पर इस्तेमाल होने का ज़िक्र किया है, मसलन मोबाइल फोन और लैपटॉप, उन्हें पहले ही जब्त कर लिया गया है.वकील ने कहा, श्अदालत ने हमारी याचिका सुनी. अभियोजन पक्ष ने पुलिस हिरासत की मांग की थी, जिसे खारिज कर दिया गया. अधिकतक को १३ जून, २०२५ तक की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है.इस बीच समाचार एजेंसी आईएएनएस का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें पुलिस की गाड़ी में बैठने से पहले शर्मिष्ठा कहती दिख रही हैं, श्लोकतंत्र में मेरा उत्पीड़न किया गया. यह लोकतंत्र नहीं है.शर्मिष्ठा पुणे के सिंबायोसिस लॉ स्कूल में बीबीए-एलएलबी ऑनर्स के चौथे साल में पढ़ती हैं. उनकी गिरफ़्तारी पर आंध्र प्रदेश के डिप्टी सीएम पवन कल्याण और पश्चिम बंगाल के विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी समेत कई लोगों ने प्रतिक्रिया दी है.शुभेंदु अधिकारी ने पश्चिम बंगाल में 'तुष्टिकरण की राजनीति' का आरोप लगाया है. वहीं पवन कल्याण ने कहा है कि पुलिस को उचित तरीके. से काम करना चाहिए.कोलकाता पुलिस के सूत्रों ने प्रभाकर मणि तिवारी को बताया कि बीते दिनों शर्मिष्ठा ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट डाली थी. हालांकि बाद में उन्होंने इसे डिलीट कर इसके लिए माफी मांग ली थी.लेकिन, १५ मई को कोलकाता के गार्डनरीच थाने में शर्मिष्ठा के खिलाफ एक शिकायत हुई, जिसके आधार पर पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया.पुलिस के मुताबिक, इस शिकायत के बाद शर्मिष्ठा को नोटिस भेजने की कोशिश की गई. लेकिन वो पूरे परिवार के साथ अंडरग्राउंड हो गई थीं. बाद में उनके खिलाफ जारी वॉरंट के आधार पर गिरफ्तारी की गई.पुलिस अधिकारी ने बताया कि शर्मिष्ठा ने विवादास्पद वीडियो वायरल होने और उसके विरोध के बाद सोशल मीडिया पर बिना शर्त माफी मांगते हुए विवादित वीडियो और संबंधित पोस्ट को हटा दिया था. लेकिन कोर्ट ने इस मामले में वॉरंट जारी किया था.सोशल मीडिया पर शर्मिष्ठा का एक वीडियो भी वायरल है, जिसमें वो एक धर्म विशेष को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी करती देखी जा रही हैं. कहा जा रहा कि पुलिस ने इसी वीडियो की शिकायत पर कार्रवाई की है.'इंडियन एक्सप्रेस' अखबार ने सिंबायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी की प्रो चांसलर के हवाले से बताया है कि शर्मिष्ठा को यूनिवर्सिटी ने अकादमिक और नॉन अकादमिक गतिविधियों से तीन महीने के लिए निलंबित कर दिया है.यूनिवर्सिटी की प्रो चांसलर विद्या यरवेडकर ने इंडियन एक्सप्रेस से कहा, शर्मिष्ठा ने जो कुछ भी कहा है उसके बारे में हमें सोशल मीडिया के जरिए पता चला. जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया गया है, वह सिंबायोसिस के स्टूडेंट या किसी भी भारतीय नागरिक के लिए पूरी तरह से अशोभनीय है.उन्होंने कहा, श्हमने यूनिवर्सिटी की आचार संहिता का पालन किया और डिसिप्लिनरी कमेटी की बैठक की. छात्रा को तीन महीने के लिए शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक गतिविधियों से निलंबित कर दिया गया है.इसके अलावा सिंबायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ने शर्मिष्ठा के प्लेसमेंट पर भी रोक लगा दी है.प्रो चांसलर ने बताया, हम वसुधैव कुटुम्बकम की भावना और सभी संस्कृतियों और धर्मों के प्रति सम्मान की शिक्षा देते हैं. हमने सख्त कार्रवाई की है और उन्हें प्लेसमेंट से भी रोक दिया है.शर्मिष्ठा की गिरफ़्तारी पर आंध्र प्रदेश के डिप्टी सीएम पवन कल्याण ने पश्चिम बंगाल पुलिस पर आरोप लगाते हुए कहा है कि सभी के लिए उचित तरीके.से काम करना चाहिए.पवन कल्याण ने एक्स पर पोस्ट किया, आँपरेशन सिंदूर के दौरान लॉ की छात्रा शर्मिष्ठा ने अपनी बात रखी. उनके शब्द खेदजनक और कुछ लोगों को दुख पहुंचाने वाले थे. उसके लिए उन्होंने अपनी गलती मान ली और वीडियो डिलीट किया. साथ ही माफी भी मांगी. पश्चिम बंगाल पुलिस तुरंत एक्शन में नजर आई और शर्मिष्ठा के खिलाफ कार्रवाई की.श्लेकिन जब टीएमसी के चुने हुए नेता, सांसद सनातन धर्म का मजाक उड़ाते हैं तो लाखों लोगों को जो गहरा, तीखा दर्द होता है, उसके बारे में क्या? जब हमारी आस्था को 'गंदा धर्म' कहा जाता है तो आक्रोश क्यों नजर नहीं आता? उनकी माफी कहां है? उनकी तत्काल गिरफ़्तारी क्यों नहीं हुई?पवन कल्याण ने इस पोस्ट के साथ पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का एक वीडियो भी शेयर किया है.पवन कल्याण ने आगे कहा, ईशनिंदा की हमेशा निंदा की जानी चाहिए. धर्मनिरपेक्षता कुछ लोगों के लिए ढाल और दूसरों के लिए तलवार नहीं है. यह दोतरफा रास्ता होना चाहिए. पश्चिम बंगाल पुलिस.. देश देख रहा है. सभी के लिए न्यायपूर्ण तरीके से काम करें.शर्मिष्ठा की गिरफ़्तारी पर पश्चिम बंगाल के विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने भी प्रतिक्रिया दी है. उन्होंने कहा है कि पश्चिम बंगाल में 'तुष्टिकरण की राजनीति' हो रही है.समाचार एजेंसी एएनआई से शुभेंदु अधिकारी ने कहा, श्महुआ मोइत्रा ने मां काली पर अपमानजनक टिप्पणी की थी. लेकिन खिलाफ एफआईआर भी दर्ज हुई थी, लेकिन क्या कोई कार्रवाई हुई? टीएमसी की सांसद सायोनी घोष की महादेव को लेकर की गई पोस्ट पर कोई कार्रवाई हुई? फिरहाद हकीम के खिलाफ कई सारी एफआईआर हुई लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई. कार्रवाई सिर्फ सनातनी के खिलाफ होती है. यहां सनातनी को गाली देने का लाइसेंस है.वहीं कांग्रेस नेता और सांसद कार्ति चिदंबरम ने कहा है कि शर्मिष्ठा की गिरफ़्तारी पुलिस की शक्तियों का दुरुपयोग है.

उन्होंने एक्स पर लिखा, जब तक यह स्पष्ट तौर पर साबित न हो जाए कि सोशल मीडिया पोस्ट से कानून और व्यवस्था की स्थिति खराब हुई है. तब तक ऐसे पोस्ट के लिए इस तरह की अंतरराज्यीय गिरफ़्तारियां स्पष्ट रूप से पुलिस शक्तियों का दुरुपयोग है.एआईएमआईएम के राष्ट्रीय प्रवक्ता वारिस पठान उन नेताओं में से हैं जिन्होंने शर्मिष्ठा की टिप्पणी के बाद उनकी गिरफ़्तारी की मांग की थी.उन्होंने शर्मिष्ठा का वीडियो बीते १४ मई को एक्स पर पोस्ट कर लिखा था, श्इससे हमारे नबी के बारे में बहुत ही बेहूदा अल्फाज इस्तेमाल किया है जो कोई भी मुसलमान बर्दाश्त नहीं करेगा. जब पूरा देश एक साथ मिलकर खड़ा है, इस वक्त इस तरह की भाषा बोलकर ये देश में सांप्रदायिक तनाव फैलाने की कोशिश कर रही है.वारिस पठान ने अपनी इसी पोस्ट के जरिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से शर्मिष्ठा की गिरफ़्तारी की भी मांग की थी.शर्मिष्ठा की गिरफ़्तारी के बाद अब वारिस पठान ने कहा है, श्किसी को भी किसी की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाने का अधिकार नहीं है. जिस वक्त पूरा देश एक साथ खड़ा है उस वक्त आप ऐसे शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं, इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा.उन्होंने कहा, उनके खिलाफ कई लोगों ने शिकायत दर्ज कराई और कानूनी कार्रवाई की मांग की. हमने भी सरकार से गुहार लगाई थी कि इनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए. इस तरह की भाषा को कोई भी बर्दाश्त नहीं करेगा.वारिस पठान ने कहा, श्अब उनके खिलाफ कार्रवाई हुई है. हमने पहले ही कहा था हिंसा का हमने हमेशा खंडन किया है. किसी को भी कानून अपने हाथ में लेने का कोई अधिकार नहीं है. मगर, कानूनी कार्रवाई ऐसी होनी चाहिए, ताकि दोबारा कोई ऐसा ना करे.

गेवरारोड-पेंड्रारोड रेलवे कॉरिडोर : विकास के साथ उपेक्षा का दंश झेल रहे ग्रामीण

कोरबा अम्बिकावाणी - केन्द्र सरकार द्वारा आम बजट में स्वीकृत १२७.७ किलोमीटर लंबा गेवरारोड-पेंड्रारोड रेलवे कॉरिडोर क्षेत्रीय विकास की नई इबारत लिखने वाला एक महत्त्वाकांक्षी प्रोजेक्ट है। इस परियोजना के माध्यम से क्षेत्र में यातायात सुगमता, आर्थिक सशक्तिकरण और व्यापारिक गतिविधियों को बल मिलने की उम्मीद है। परंतु इसके निर्माण कार्य के बीच कटघोरा जनपद अंतर्गत राल और डोकारीखार गांवों के ग्रामीण भारी समस्याओं से जूझ रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि रेलवे कॉरिडोर के कारण मुख्य मार्ग पूरी तरह कीचड़ में तब्दील हो चुका है। बरसात के मौसम में यह स्थिति और भी विकराल हो जाती है, जिससे स्कूली बच्चे समय पर स्कूल नहीं पहुंच पाते और उनकी पढ़ाई बुरी तरह प्रभावित हो रही है। साथ ही, मेडिकल आपातकालीन स्थिति में भी गांव से बाहर आना-जाना मुश्किल हो गया है। ग्रामीणों और स्थानीय कर्मचारियों को प्रतिदिन इस दलदली रास्ते से गुजरना पड़ रहा है, जिससे कई लोग चोटिल भी हो चुके हैं। ग्रामवासियों ने बताया कि पूर्व में रेलवे विभाग के अधिकारी राकेश सिंह द्वारा ग्रामीणों की समस्याओं को लेकर लिखित सहमति दी गई थी, जिसमें मार्ग सुधार और सुरक्षा उपायों का उल्लेख था। लेकिन आज दिनांक तक उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। ग्रामीणों ने बार-बार रेलवे विभाग और प्रशासन से संपर्क किया है, लेकिन अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। ग्रामीणों की प्रमुख मांग यह है कि रेलवे कॉरिडोर के अंतर्गत बने पुलिया के किनारे कंक्रीट वॉल का निर्माण कराया जाए, जिससे बारिश के दौरान मिट्टी का कटाव रोका जा सके और सड़क टिकाऊ बनी रहे। उनका कहना है कि यह इलाका अंदरूनी होने के कारण प्रशासनिक नजरों से दूर रह जाता है, जिससे उनकी समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा। जहां एक ओर रेलवे कॉरिडोर क्षेत्र के लिए एक बड़ी सौगात मानी जा रही है, वहीं दूसरी ओर राल और डोकारीखार जैसे गांव इसके दुष्परिणाम भुगत रहे हैं। ग्रामीणों ने उम्मीद जताई है कि शासन-प्रशासन इस ओर शीघ्र ध्यान देगा और विकास के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारी का भी निर्वहन करेगा।

एचटीपीएस में पर्यावरण संरक्षण का संदेश

लेकर निकाली गई साइकिल रैली, आवासीय परिसर में बच्चों के बीच चित्रकला स्पर्धा आयोजित

कोरबा अम्बिकावाणी - हसदेव ताप विद्युत संयंत्र (एचटीपीएस) कोरबा पश्चिम में विश्व पर्यावरण सप्ताह उत्साह से मनाया जा रहा है। ०५ जून विश्व पर्यावरण दिवस के लिए इस सप्ताह विभिन्न कार्यक्रम रखे गए हैं। रविवार को सुबह मुख्य अभियंता पीके श्रीवास्तव की अगुवाई में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए साइकिल रैली निकाली गई। आवासीय परिसर में कार्यक्रम की शुरूआत च्चहरित प्रतिज्ञाज्ञ के साथ की गई। इसके साथ ही च्च्एक पेड़ मां के नामज्ज अभियान के तहत वृक्षारोपण का आह्वान किया गया। इस अवसर पर मुख्य अभियंता पीके श्रीवास्तव ने कहा कि हर व्यक्ति ₹ एक पेड़ मां के नामश जरूर लगाएं।

कार्यक्रम में संकल्प महिला मंडल, कोरबा पश्चिम की अध्यक्ष रूबी श्रीवास्तव द्वारा साइकिल रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। पर्यावरण संरक्षण के संदेश को लेकर निकाली गई यह रैली सीनियर क्लब से निकलकर कालोनी परिसर का भ्रमण करते हुए सीनियर क्लब लौट गई। रैली में बड़ी संख्या में संयंत्र के अधिकारी-कर्मचारी एवं उनके परिजनों ने हिस्सा लिया। रैली के प्रति बच्चों में खासा उत्साह रहा। सहायक प्रबंधक पर्यावरण विकास उइके ने बताया कि इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की थीम-च्वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करनाज्ज है। इस विषय पर बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन रखा गया। इसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य अभियंता एमके गुप्ता, पीके स्वैन और सुधीर पंड्या ने हिस्सा लिया।

नियमों का उल्लंघन करने वाले पुलिसकर्मी पर एसपी ने की कार्रवाई, 2300 रुपए का जुमार्ना

कोरबा अम्बिकावाणी - जिले सहित अंचल में यातायात नियमों के उल्लंघन पर कोरबा पुलिस द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। जिला पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी के निर्देश पर यातायात पुलिस व थाना स्टाफ द्वारा समय-समय पर विशेष अभियान चलाकर नियम तोड़ने वालों पर सख्त कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में एसपी सिद्धार्थ तिवारी ने अपने ही एक अधीनस्थ पर नियम उल्लंघन के चलते कार्रवाई की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, पुलिस अधीक्षक जब शहर भ्रमण पर थे, तभी उनकी नजर टीपी नगर से सीएसईबी चौक के बीच बुलेट बाइक पर सवार एक आरक्षक पर पड़ी। उक्त बाइक में मोडिफाइड साइलेंसर लगा था, जो अत्यधिक शोर कर रहा था। एसपी तिवारी ने तत्काल संबंधित अधिकारियों को कार्रवाई के निर्देश दिए। निर्देशानुसार, सीएसईबी पुलिस सहायता केंद्र में पदस्थ उक्त आरक्षक की बुलेट जब्त कर मोटर व्हीकल एक्ट के तहत २३०० रुपये का जुमार्ना लगाया गया और मॉडिफाइड साइलेंसर तत्काल हटवा दिया गया। इस कार्रवाई के माध्यम से पुलिस अधीक्षक ने स्पष्ट संदेश दिया है कि कानून सबके लिए समान है। चाहे वह आम नागरिक हो या फिर पुलिस विभाग का कोई कर्मचारी–नियमों का पालन सभी को करना होगा।

वयवंदन के हितग्राहियों का आधार अपडेशन प्राथमिकता से पूर्ण करें- कलेक्टर अजीत वसंत

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की बैठक आयोजित

कोरबा अम्बिकावाणी - कलेक्टर अजीत वसंत की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिला स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की बैठक आयोजित हुई। उन्होंने राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए लक्ष्य की शतप्रतिशत उपलब्धि प्राप्त करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि सभी विकासखंडों में वयवंदन के हितग्राहियों के आधार अपडेशन प्राथमिकता से पूर्ण कर लिया जाए ताकि उन्हे स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ आयुष्मान कार्ड से प्राप्त हो सके। आधार अपडेशन का कार्य अभियान के रूप में पूर्ण किया जाए। इसके लिए गांवों में वीएलई घर घर जा कर आधार अपडेशन करें। स्वास्थ्य विभाग का मैदानी अमला भी आधार अपडेशन के लिए ग्रामीणों को प्रेरित करें। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में हर ०३ माह में वरिष्ट नागरिकों की चिकित्सा जांच एवं उपचार के लिए विशेष स्वास्थ्य शिविर लगाए जावे।उन्होंने निर्देश दिए कि मानसून का आगमन होने वाला है, बारिश के दौरान होने वाली संचारी बीमारी, मलेरिया, डायरिया हैजा,डेंगू आदि के नियंत्रण के लिए स्वास्थ्य विभाग योजनाबद्ध तरीके से सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर लेवे। मितानिनों के द्वारा बीमारियों से बचाव के लिए जनजागरुकता कार्य किए जाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि कोई भी स्वास्थ्य कर्मी बिना बताए अनुपस्थित न रहे। बिना बताए अनुपस्थित रहने वाले अधिकारी, कर्मचारियों के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही की जाए। अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के दायित्व और कर्तव्य पालन पर नजर रखें। कलेक्टर ने जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं का समुचित क्रियान्वयन करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि शत प्रतिशत संस्थागत सुरक्षित प्रसव कराएं जावे। उन्होंने मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को रोकने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने स्वस्थ अमले को निर्देशित किया कि विशेष पिछड़ी जनजाति वाली ग्राम पंचायतों को प्राथमिकता से टीबी मुक्त किया जाए। समीक्षा बैठक में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ एस एन केशरी तथा समस्त कार्यक्रम नोडल अधिकारी, डीपीएम,समस्त खंड चिकित्सा अधिकारी, समस्त बीपीएम एवं विभाग के अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे। समीक्षा के दौरान सीएमएचओ डॉ एस एन केशरी द्वारा समस्त राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लक्ष्य एवं उपलब्धि की जानकारी दी गई। कलेक्टर ने सभी चिकित्सा अधिकारियों को अपने ड्युटी टाइम में चिकित्सालय में उपस्थित रहकर मरीजों का इलाज करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने पीवीटीजी बसाहटों में स्वास्थ्य शिविर लगाकर उन्हें स्वास्थ्य लाभ पहुचाने के निर्देश दिए। शिविर में उनका आवश्यक स्वास्थ्य परीक्षण, खुन, शुगर, बीपी की जांच, आयुष्मान कार्ड बनाने आदि जैसे अनेक स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं से लाभावित करने के लिए कहा। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि सामूहिक सहवास से जिले को टी बी मुक्त बनाएं। टीबी मरीजों का कांटेक्ट ट्रेसिंग कर उन्हें जांच एवं दवाइयां उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होने निर्देश दिए कि ग्रामीण क्षेत्र में आयुष्मान कार्ड एवं दिव्यांग प्रमाणपत्र प्राथमिकता से बनावें।

बैठक में कलेक्टर ने कहा कि सभी केंद्रों में आवश्यक सभी दवाइयां की शत प्रतिशत उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। जिले में संस्थागत प्रसव की उपलब्धि की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने शत प्रतिशत प्रसव संस्थागत कराने के निर्देश दिए। साथ ही प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं सब हेल्थ सेंटर में संस्थागत प्रसव की संख्या बढ़ाने की बात कही। उन्होंने सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तथा उप स्वास्थ्य केंद्रों में प्रसव अनिवार्य रूप से कराने के लिए कहा। इस हेतु मितानिनों के माध्यम से गर्भवती महिलाओं का पंजीयन उनका नियमित स्वास्थ्य जांच एवं फालोअप लेने की बात कही। कलेक्टर ने कहा कि महिलाओं को प्रसव पूर्व जांच के दौरान उन्हें पूर्व में हुई बीमारी के विषय में जानकारी अवश्य देना चाहिए ताकि उनका उचित इलाज हो सके।उन्होंने मातृ मृत्यु एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने हेतु आवश्यक सभी प्रयास करने की बात कही। बैठक में कलेक्टर ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के अंतर्गत दी जाने वाली विभिन्न प्रकार की टीका, कुष्ठ उन्मूलन, क्षय रोग, टी.बी. एड्स, हाइपरटेंशन, अंधत्व निवारण, चश्मा वितरण, विटामिन दवा, मनोरोग चिकित्सा, लैब आन व्हील्स कार्यक्रम की भी समीक्षा करते हुए योजनाओं की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने सभी योजनाओं का शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने हेतु सभी अधिकारियों को व्यक्तिगत रुचि लेकर कार्य करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने डीएमएफ मद के तहत नियुक्त किए गये चिकित्सकों के ड्युटी कार्य की जानकारी ली। उन्होंने डीएमएफ एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत सभी रिक्त पदों के विरुद्ध चयनित चिकित्सक या अन्य अभ्यर्थियों के द्वारा ड्युटी ज्वाइन नहीं करने पर प्रतीक्षा सूची से अभ्यर्थियों का चयन शीघ्र करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि संबंधित गायनकोलॉजिस्ट द्वारा उच्च जोखिम गर्भवती महिलाओं की जांच स्वास्थ्य केंद्रों में समय पर सुनिश्चित की जाएं और उसका फॉलो अप ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर जरूर लेवें।

दुर्ग जिले में शिक्षकों की पोस्टिंग में असंतुलन से प्रभावित हो रहा ग्रामीण अंचल के स्कूलों का परीक्षा परिणाम

रायपुर। जिला शिक्षा अधिकारी दुर्ग ने शिक्षा विभाग को प्रेषित अपनी रिपोर्ट में इस बात का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि जिले के ग्रामीण अंचलों के शासकीय हाई स्कूलों में शिक्षकों की भारी कमी तथा शहरी क्षेत्रों में शिक्षकों की अधिकता के कारण शैक्षिक व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। यही कारण है कि ग्रामीण अंचल के स्कूलों का परीक्षा परिणाम औसत से भी कम है। शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार के लिए युक्तियुक्तकरण जरूरी है। ग्रामीण अंचल के विद्यालयों में शिक्षकों की आवश्यकता के अनुरूप पदस्थापना करने से बच्चों को बेहतर शिक्षा मिलेगी और रिजल्ट में सुधार होगा। जिला शिक्षा अधिकारी ने अपने रिपोर्ट में उल्लेखित किया है कि विकासखंड धमधा अंतर्गत शासकीय हाई स्कूल मुरमुदा में स्वीकृत 6 पदों के विरुद्ध मात्र 3 व्याख्याता कार्यरत हैं, जबकि कक्षा दसवीं की छात्र संख्या 63 है। शिक्षक अभाव के कारण यहाँ का वार्षिक परीक्षा परिणाम मात्र 47.62 प्रतिशत रहा। इसी प्रकार शासकीय हाई स्कूल सिलितरा और शासकीय हाई स्कूल बिरेंझर में भी स्थिति अत्यंत दयनीय है। दोनों विद्यालयों में स्वीकृत 6-6 पदों के विरुद्ध एक भी व्याख्याता पदस्थ नहीं है। क्रमशः 81 एवं 63 छात्रों की दर्ज संख्या वाले इन विद्यालयों में परीक्षा परिणाम क्रमशः 36.59 प्रतिशत एवं 35.00 प्रतिशत ही रहा है।

वहीं दूसरी ओर, शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में छात्रों की अपेक्षा शिक्षकों की संख्या आवश्यकता से कहीं अधिक है। उदाहरणस्वरूप, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला केम्प-1 मिलाई में 225 छात्रों के लिए स्वीकृत 7 पदों के विरुद्ध 17 शिक्षक कार्यरत हैं, जो कि दर्ज संख्या के मान से 10 शिक्षक अधिक हैं। इसी प्रकार नेहरू शासकीय प्राथमिक शाला दुर्ग में 113 छात्रों के लिए स्वीकृत 4 पदों की तुलना में 11 शिक्षक पदस्थ हैं, जो कि 7 शिक्षक अतिरिक्त हैं। जिला शिक्षा अधिकारी दुर्ग ने ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षकों की शीघ्र पदस्थापना की आवश्यकता जताई है, ताकि परीक्षा परिणाम में सुधार लाया जा सके और छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो सके।

प्रदेश संगठन महामंत्री ने मंडल अध्यक्ष महामंत्री के साथ की मंत्रणा, आगामी कार्यक्रमों पर किया मार्गदर्शन

कोरिया बैकुण्ठपुर - भारतीय जनता पार्टी के आगामी कार्यक्रम को लेकर विश्राम गृह बैकुण्ठपुर में मंडल अध्यक्ष-महामत्रियों की बैठक संपन्न हुई। बैठक में प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय ने संगठनात्मक गतिविधियों पर चर्चा करते हुए, आगामी कार्यक्रम संकल्प से सिद्धि थीम पर मोदी सरकार के ११ साल की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया जाएगा, साथ ही मोदी सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रचार-प्रसार किया जाएगा। आगामी कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत चर्चा कर रूप रेखा तैयार किया गया।

इस अवर पर प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय, स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल, भरतपुर-सोनहत विधायक रेणुका सिंह, जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, पूर्व जिलाध्यक्ष कृष्णबिहारी जायसवाल, जिला महामंत्री पंकज गुप्ता विनोद साहु जिला सह मीडिया प्रभारी तीरथ राजवाडे, मंडल अध्यक्ष अनिल खटिक, मैनेजर राजवाड़े, संजय चिकनजूरी, दीपा विश्वकर्मा, किशोर सिरदार, रामलखन यादव, राजाराम राजवाड़े, मनोज साहु, सुरेश राजवाड़े, रवि त्रिपाठी, रमन गुप्ता, सचिन गुप्ता, मुन्ना चक्रधारी, रिता यादव, सत्यम साहु, सचिदानंद द्विवेदी, सुरेश सिरदार, दिनेश साहु, सुशीला साहु, राकेश पैकरा मौजूद रहें।

केंद्रीय विद्यालय में भारतीय भाषा समर कैंप का शुभारम्भ

सरगुजा/एमसीबी। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय अंबिकापुर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के अंतर्गत एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के तहत शुक्रवार को भारतीय भाषा समर कैंप का उत्साहपूर्वक शुभारंभ हुआ। यह विशेष कार्यक्रम आगामी सात दिनों तक संचालित किया जाएगा।

कार्यक्रम के पहले दिन विद्यालय के स्नातकोत्तर शिक्षक एवं सीसीए प्रभारी श्री अनिल खेस्स एवं शिक्षिका श्रीमती प्रतिमा सिंह ने विद्यार्थियों को मराठी भाषा की बुनियादी जानकारी दी। उन्होंने संख्याओं की गिनती, अभिवादन के सामान्य शब्दों और आत्म-परिचय जैसे संवाद सिखाए। अपने संबोधन में उन्होंने भाषायी विविधता के महत्व और भाषाओं की सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका को रेखांकित किया। यह आयोजन विद्यालय के प्राचार्य राजेश प्रसाद के निर्देशन में संपन्न हुआ। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य ने भाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि भाषा केवल संवाद का माध्यम ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति का हिस्सा है जो हम सभी को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती है।

भारतीय भाषा के इस समर कैंप में विद्यालय के कई विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ सक्रिय भागीदारी निभाई।

अगर आपको दूसरों केधन्धे में मन लगाने की आदत है तो आपका अपने धन्धे में दिवाला निकल जायेगा। 0 ब्रम्हकुमारी

संपादकीय

दिमाग ठंडा मगर खून गर्म

राजस्थान के बीकानेर में रैली को संबोधित करते करते हुए उन्होंने कहा कि, 'जो लोग महिलाओं के माथे से सिंदूर पोंछने निकले थे, वे धूल में मिल गए। मोदी सीना तान कर खड़ा है, मोदी का दिमाग ठंडा है मगर खून गर्म है। उन्होंने यह भी जोड़ा, अब मेरी रगों में खून नहीं, सिंदूर दौड़ रहा हैइ

बीकानेर पाकिस्तान से 168 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करता है और पड़ोसी मुल्क के पंजाब के बहावलपुर जिले के बिल्कुल सामने है। इसलिए इस इलाके के बाशिंदों को सीमा पार से होने वाले हमलों या घसपैठियों का सीधा सामना करना पड़ता है। मोदी ने स्थानीय लोगों को परमाणु खतरों से भयभीत न होने के साथ ही पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर बात करने की भी चर्चा की। कहा जा सकता है कि मोदी ने दुश्मन देश के भीतर घुसकर आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दुनिया को स्पष्ट संदेश दिया है कि वह आतंकवाद को लेकर अपनी नीति में तब्दीली ला रहा है और मासूम देशवासियों के खून का बदला लेने में किसी की सलाह का इंतजार नहीं करने वाला। अब दिखावटी भभकियां देने का वक्त नहीं रहा। आतंकवाद को प्रश्रय देने वाले दुश्मन मुल्क के सैन्य प्रतिष्ठानों पर आतंकवादी संगठनों से मिलीभगत रखने के आरोप पहले ही लगते रहे हैं।

राजनीतिक अस्थिरता, लोकतंत्र पर लगने वाली खरोचें और आर्थिक ढुलमुलाहट ने पाक को भीतर से झकझोर रखा है। वह मित्र देशों के बलबूते ज्यादा देर तक भारतीय सुरक्षा बलों के समक्ष खड़ा नहीं रह सकता, इसका उसे अहसास हो चुका है। तमाम संदेहों के बावजूद मोदी के कट्टर विरोधियों ने भी इस हमले को लेकर एक सुर में अहम बताया और सुरक्षाबलों का हौसला बढ़ाने में कसर नहीं छोड़ी। लाजिमी है कि सत्ता की बागडोर संभालने वालों को संवैधानिक ढांचे का सम्मान रखते हुए सुरक्षा-व्यवस्था पर सदन में गंभीर चर्चा भी करनी चाहिए। यह किसी शख्स की जीत या हार नहीं बल्कि आतंकवाद के खिलाफ चालू हुआ ऑपरेशन कहा जा सकता है।

भारत-पाकिस्तान के बीच हुए संघर्ष विराम के बाद अपने पहले सार्वजनिक संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दोहराया कि 'ऑपरेशन सिंदूरइ ने पाक व उसके आतंकवाद ी संचालकों को झुकने पर मजबूर कर दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण का नया अध्याय लिख रहा मध्यप्रदेश

0-के.के.जोशी

मध्यप्रदेश देश के हृदय स्थल में बसा एक ऐसा राज्य है जिसने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में आज पूरे देश में नई मिसाल कायम कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार ने स्व-सहायता समूहों को महिला सशक्तिकरण का एक सशक्त माध्यम बनाया है। स्व-सहायता समूह न केवल ग्रामीण और शहरी महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना रहे हैं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी उनकी स्थिति को सुदृढ़ कर रहे हैं।

पिछले कुछ समय में मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण की दिशा में मध्यप्रदेश ने कई उपलब्धियों को हासिल किया है। सरकार की अनेक नीतियां और योजनाएं महिलाओं के उत्थान में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

स्व-सहायता समूहों के माध्यम से बदली जिंदगी

मध्यप्रदेश में स्व-सहायता समूहों को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जा रहा है। वर्तमान में, राज्य में 5 लाख से अधिक स्व-सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनमें लगभग 62 लाख महिलाएं जुड़ी हैं। ये समूह महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, कौशल विकास, और सामुदायिक नेतृत्व के अवसर प्रदान कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मानना है कि स्व-सहायता समूह न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का साधन हैं, बल्कि सामाजिक बदलाव का भी एक जन-आंदोलन है। मध्यप्रदेश सरकार ने स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के लिए कई महत्वाकांक्षी योजनाएं शुरू की हैं जिनका प्रभाव राज्य के हर कोने में महसूस किया जा सकता है। मुख्यमंत्री उद्यम शक्ति योजना ने हजारों महिला समूहों को कम ब्याज पर ऋण दिलाकर उनके छोटे-छोटे व्यवसायों को सहारा दिया है। अब महिलाएं न सिर्फ घर चला रही हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे रही हैं। अब तक 30 हजार 264 महिला समूहों और 12 हजार 685 महिला उद्यमियों को 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान के रूप में 648.67 लाख की राशि वितरित की जा चुकी है।

बचत को प्रोत्साहित करती लाड़ली बहना योजना

लाड़ली बहना योजना के तहत हर महीने 1.27 करोड़ बहनों के खाते में 1551.86 करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता उनके खातों में पहुंच रही है। इससे न केवल आर्थिक रूप से महिलाओं की स्थिति बेहतर हो रही है बल्कि महिलाएं डिजिटल युग की सहभागी भी बन रही हैं। इस योजना में 1.27 करोड़ महिलाओं को अब तक 35,329 करोड़ रुपये से अधिक की राशि प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त, 25 लाख महिलाओं को 450 रुपये में गैस सिलेंडर रीफिलिंग के लिए 882 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता दी गई है। यह योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उनके परिवारों में बचत को प्रोत्साहित कर रही है।

मुख्यमंत्री- लाड़ली लक्ष्मी योजना ने पेश की मिसाल

मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना में वर्ष 2024-25 में 2 लाख 73 हजार 605 बालिकाओं का पंजीकरण हुआ और लगभग 223 करोड़ रुपए से अधिक की छात्रवृत्ति यूनि-पे के जरिए वितरित की गई। अब तक कुल 50 लाख 41 हजार 810 बेटियां इस योजना का हिस्सा हैं।

हम होंगे कामयाब अभियान से मिला सम्मान

राज्य सरकार द्वारा नारी शक्ति मिशन के तहत जिला, परियोजना और ग्राम स्तर पर 100 दिवसीय जागरूकता हम होंगे कामयाब अभियान चलाया गया। इसमें प्रदेश में जेंडर संवादों, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, सायबर सुरक्षा, कार्यस्थल पर उत्पीड? और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों की महिलाओं को न केवल जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना भी सिखाया गया।

आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में प्रेरित लखपति दीदी

मध्यप्रदेश सरकार ने स्व-सहायता समूहों के माध्यम से 1 लाख से अधिक महिलाओं को लखपति दीदी बनाया है। सरकार का लक्ष्य 5 लाख स्व-सहायता समूहों के माध्यम से 62 लाख महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। यह पहल ग्रामीण महिलाओं को उद्यमिता और आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में प्रेरित कर रही है।

महिला उद्यमिता को मिल रहा है प्रोत्साहन

मध्यप्रदेश में 850 से अधिक एमएसएमई इकाइयों को 275 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की गई है, जिससे महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन मिला है। इसके अलावा, रेडीमेड गारमेंट उद्योग में कार्यरत महिलाओं को प्रति माह 5,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जा रही है, जिससे उनकी मासिक आय में बढ़ोत्तरी हो रही है।

महिला हेल्पलाइन और महिला पुलिस स्टेशन दे रहे सुरक्षा

राज्य सरकार ने नारी सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता में रखा है। पुलिस बल में महिलाओं की संख्या बढ़ाई गई है और महिलाओं के खिलाफ अपराधों के मामले में सख्त सजा का प्रावधान किया गया है। महिला हेल्पलाइन और महिला पुलिस स्टेशन जैसी सेवाओं को भी मजबूत किया गया है। महिला हेल्पलाइन 181 और चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 को अब 112 आपात सेवा से जोड़ा गया है। वर्ष 2024-25 में लगभग 82 हजार 552 महिलाओं को त्वरित सहायता मिली है। योजना के प्रारंभ से अब तक एक लाख 57 हजार महिलाओं को लाभ मिल चुका है

देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन के बढ़ते कदम

यह मिशन प्रदेश में लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर की 300वीं जयंती के अवसर पर शुरू किया गया। यह मिशन महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के लिए समर्पित है। इस मिशन के तहत स्व-सहायता समूहों को स्टार्ट-अप अभियान से जोड़ा गया, जिसमें 8 करोड़ 10 लाख रुपये के निवेश पत्र वितरित किए गए।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में राज्य में महिलाओं के लिए न केवल सशक्तिकरण के अवसर पैदा किए गए हैं, बल्कि अब महिलाएं पारंपरिक घरेलू कार्यों से बाहर निकलकर विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं।

तंबाकू: मीठा जहर और धीमी मौत

डॉ. केशव पाण्डेय

हर साल 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया जाता है। यह दिन केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक ऐसा वैश्विक प्रयास है जो हमें चेताता है, झकझोरता है और प्रेरित करता है कि तंबाकू जैसी घातक लत से समाज को बचाया जाए। यह अवसर हमें आत्मचिंतन करने के साथ-साथ जनजागरूकता फैलाने का भी मौका देता है कि कैसे एक छोटी-सी आदत पूरे जीवन को निगल सकती है।

आइये, जानते हैं, इस दिवस का महत्व, इसके पीछे की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और तंबाकू के दुष्परिणाम और इस वर्ष की खास थीम।

तंबाकू का सेवन चाहे सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, पान मसाला या किसी अन्य रूप में किया जाए, यह शरीर के लिए धीमा जहर है। इसके सेवन से सबसे अधिक प्रभावित होता है हमारा श्वसन तंत्र और हृदय। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर साल दुनियाभर में 80 लाख से ज्यादा लोगों की मौत तंबाकू जनित बीमारियों के कारण होती है। इन मौतों में से लगभग 12 लाख लोग वे होते हैं जो स्वयं तंबाकू का सेवन नहीं करते, बल्कि परोक्ष रूप से यानी पैसिव स्मोकिंग से प्रभावित होते हैं।

तंबाकू के सेवन से लाखां लोग अनेक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं, इनमें फेफड़ों का कैंसर, मुँह का कैंसर, दिल का दौरा, स्ट्रोक, दमा, ब्रोंकाइटिस, उच्च रक्तचाप हार्ट फेल्योर, क्रॉनिक ब्रोंकाइटिस, क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज, अस्थमा, दाँत गिरना, मसूड़ों में संक्रमण, सफेद धब्बे जो कैंसर का कारण बन सकते हैं। इनके अलावा गर्भवती महिलाओं में भ्रूण की वृद्धि में बाधा, समय से पहले प्रसव, नवजात की मृत्यु जैसी जानलेवा बीमारियां शामिल हैं।

भारत में भी तंबाकू एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है। देश में हर साल लगभग 13 लाख लोग तंबाकू के कारण असमय काल के गाल में समा जाते हैं। यह कुल मृत्यु दर का लगभग 9.5 प्रतिशत है। इनमें से लगभग 10-12 लाख मौतें धूम्रपान से होती हैं, और शेष गुटखा, पान मसाला, हुक्का जैसे चबाने वाले तंबाकू उत्पादों से।

जबकि मध्य प्रदेश में हर साल लगभग 90 हजार से एक 1 लाख लोगों की मौत तंबाकू सेवन के कारण होती है। राज्य में पुरुषों के बीच तंबाकू सेवन की दर 40 प्रतिशत से अधिक है, जबकि महिलाएं की लगभग 10से12 प्रतिशत। ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या ज्यादा गंभीर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, अगर तंबाकू पर सख्ती से नियंत्रण न लगाया गया, तो आने वाले दशकों में तंबाकू से हर साल 1 करोड़ मौतें हो सकती हैं, जिनमें से 70 प्रतिशत विकासशील देशों में होंगी, उनमें भारत सबसे प्रमुख है।

इस दिवस के इतिहास की बात करें तो विश्व तंबाकू निषेध दिवस की शुरूआत 1987 में हुई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे पहली बार 7 अप्रैल 1988 को मनाने की घोषणा की थी, लेकिन बाद में इसकी तारीख बदलकर 31 मई कर दी गई। इसका उद्देश्य तंबाकू के हानिकारक प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना और सरकारों को तंबाकू नियंत्रण नीतियाँ लागू करने के लिए प्रेरित करना था। यह दिवस तंबाकू नियंत्रण नीतियों और कानूनों के समर्थन को एक वैश्विक मंच प्रदान करता है। जिससे तंबाकू के सेवन को लेकर समाज में सकारात्मक बदलाव हो और लोग इससे दूर हटने का प्रयास करें।

प्रति वर्ष यह दिवस एक खास थीम पर मनाया जाता है। जो विशेष रूप से किसी एक पहलू पर केंद्रित होती है- जैसे कि युवाओं को तंबाकू से बचाना, पर्यावरण पर तंबाकू का प्रभाव, या तंबाकू उद्योग की रणनीतियों को उजागर करना। साल 2025 की तंबाकू निषेध दिवस की थीम- न्दउेंपदह जीम ।चचमंसरू म्गचवेपदह प्दकनेजतल ज्बजपबे वद ज्वइंबबव ंदक छपबवजपदम च्तवकनबजेष यानी आकर्षक का पदार्फाश : तंबाकू और निकोटिन उत्पाद पर इसके उद्योग की चाल को बेनकाब करना और उसकी नीतियों को उजागर करना है। तंबाकू उद्योग जानबूझकर अपनी नीतियों और विज्ञापनों के माध्यम से किशोरों और युवाओं को निशाना बनाता है। चमकीले पैकेट, आकर्षक विज्ञापन और फिल्मों में ग्लैमराइज्ड तंबाकू सेवन दृश्य, ये सब युवा मन को भ्रमित करते हैं। एक बार यह लत लग गई, तो इससे निकलना कठिन हो जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि ये रणनीतियाँ तंबाकू के सेवन को आकर्षक बनाती हैं, जिससे युवाओं में इसकी शुरूआत होती है और उसे छोड ?ा मुश्किल हो जाता है। कंपनियां के इस भ्रमजाल से युवाओं बचाना है।

यह थीम और दिन हमें यह सोचने का मौका देता है कि हम अपने और आने वाली पीढि ?ों के लिए कैसी दुनिया बनाना चाहते हैं। क्योंकि तंबाकू के भी सामाजिक और आर्थिक दुष्परिणाम होते हैं। तंबाकू न केवल स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भी विनाशकारी है। गरीब और निम्न आय वर्ग के लोग तंबाकू सेवन के सबसे बड़े शिकार होते हैं, क्योंकि वे अक्सर जागरूकता और स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित होते हैं। जब ये लोग बीमार पड़ते हैं, तो उनकी कमाई रुक जाती है और इलाज पर भारी खर्च आता है। इससे परिवार गरीबी के दुष्चक्र में फँस जाता है।

सरकार को भी तंबाकू जनित बीमारियों के इलाज पर हर साल करोड़ों रुपए खर्च करने पड़ते हैं, जो कि यदि तंबाकू नियंत्रण प्रभावी हो तो शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य सुधार में लगाए जा सकते हैं।

यह आर्थिक बोझ केवल व्यक्तिगत नहीं, राष्ट्रीय स्तर पर भी विनाशकारी होता है।

नारी शक्ति की प्रतीक : रानी अहिल्याबाई होलकर और छत्तीसगढ़ सरकार की प्रतिबद्धता

भारत के इतिहास में कुछ महिलाएं ऐसी रही हैं जिनका जीवन आने वाली पीढि ?ों के लिए आदर्श बन गया। उन्हीं में से एक हैं राजमाता अहिल्याबाई होलकर, जिनकी 300वीं जयंती पर हम श्रद्धा और गर्व के साथ उन्हें स्मरण कर रहे हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं उन्हें सादर नमन करती हूं और उनके आदर्शों को आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दोहराते हुए छत्तीसगढ़ सरकार की नारी सशक्तिकरण योजनाओं की चर्चा करना चाहती हूं।

अहिल्याबाई होलकर : त्याग, सेवा और न्याय की मूर्ति

रानी अहिल्याबाई होलकर का जीवन संघर्षों से भरा हुआ था, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। एक युवा विधवा के रूप में उन्होंने न केवल स्वयं को संभाला, बल्कि संपूर्ण मालवा राज्य को कुशलता से चलाया। वे प्रशासन, धर्म, सामाजिक समरसता और दान की मिसाल थीं।

उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर, सोमनाथ मंदिर, अयोध्या, बद्रीनाथ, द्वारका जैसे स्थानों पर पुनर्निर्माण कार्य कर भारतीय संस्कृति और आस्था की रक्षा की। उनके कार्य इस बात का प्रमाण हैं कि यदि नारी को अवसर और अधिकार मिले, तो वे समाज और राष्ट्र दोनों को दिशा दे सकती हैं।

छत्तीसगढ़ सरकार का संकल्प : हर नारी बने समर्थ

छत्तीसगढ़ सरकार मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में, अहिल्याबाई होलकर के पदचिन्हों पर चलते हुए नारी सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है।

महतारी वंदन योजना - छत्तीसगढ़ सरकार ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक सम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महतारी वंदन योजना की शुरूआत की है। इस योजना के तहत पात्र विवाहित, विधवा, तलाकशुदा और परित्यक्ता महिलाओं को प्रतिमाह 1,000 रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद मिल रही है। अबतक लगभग 70 लाख महिलाओं को 15 किश्तो में 9788.78 करोड़ रूपए सहायता राशि प्रदान की जा चुकी है।

महिला स्वावलंबन योजनाए - राज्य सरकार ने महिला स्व-सहायता समूहों को मजबूत बनाने के उद्देश्य से स्वरोजगार योजनाएं प्रारंभ की और कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम की ठोस पहल की है। इन पहलों से लाखों महिलाएं अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं।

महिलाओं की सुरक्षा और न्याय के लिए महिला हेल्पलाइन 181, वन स्टॉप सेंटर, फास्ट ट्रैक कोर्ट, विधिक सहायता जैसे उपाय सुनिश्चित किए गए हैं ताकि हर महिला को न्याय मिले और वह भयमुक्त जीवन जी सके।

मारा लक्ष्य : सशक्त, सुरक्षित और सम्मानित नारी समाज

रानी अहिल्याबाई होलकर जी ने जिस समाज की कल्पना की थी। उसे साकार करने के लिए हमें शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान के चार स्तंभों पर कार्य करना होगा।

0 लक्ष्मी राजवाड़े

अम्किावाणी-वर्गपहेली 1342

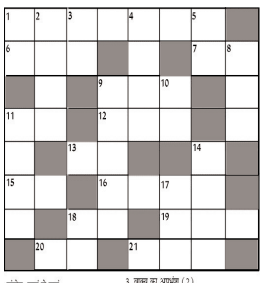

संकेत: बाएं से दाएं

1. इंदौर नगर के इतिहास में प्रथम समाचार पत्र होने का गौरव इस अखबार को है जो कए साप्ताहिक था उसका प्रथम अंक 6 मार्च 1849 को प्रकाशित हुआ था (7)
6. कंठ, गले की नली (3)
7. जगत, संसार, दुनिया, जग (2)
9. गोद, अंक,क्रोड, बगल (3)
11. कनक, धतूरा, स्वर्ण (2)
12. आवेश, उन्माद (3)
13. यह बांग्लोदश में बूढी गंगा के तट पर देश का सबसे बड़ा शहर है (2)
15. असम के पहाड़ी क्षेत्र में स्थित जंगल जाति, अनुपस्थितिती, गैर हाजिरी (2)
16. जिसके पांच मुख हो, पंचमुखी (4)
18. पक्षी, नभचारी, गगनचर (2)
19. हिंदी साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई दो या दो अधिक बार आए और प्रत्येक बार उसके भिन्न अर्थ हो (3)
20. गज, कंजर, मतंगत (2)
21. श्रृंगार, सजावट, शोभा, श्री (3)

ऊपर से नीचे(2)

1. मास, महीना, तीस दिनों का समय (2)
2. तीव्र अभिलाषित होना, उत्कंठित होना (4)
3. वाक्य का अपभ्रंश (2)
4. पश्चिमी निमाड़ का प्रसिद्ध जिला (4)
5. भास्कर, दिनपति, दिवाकर, सूरज (2)
8. सांस लेने छोड़ने की एक जैविक क्रिया (3)
9. निर्देशक मोहनकुमार की राजेंद्र कुमार वैजयंती माला अभिनीत 1961 की एक हिट फिल्म (5)
10. वह राजा जिसके नाम से कोई संवत चले वहम, संदेह (2)
11. गुजरा में द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक जो पश्चिमी तट पर प्रभाष क्षेत्र में स्थित है (4)
14. लोकमत, जनता की राय (4)
17. चक्षु, नेत्र, आंख (3)
18. पक्षधर, अनुगामी, यात्री, राहगीर (2)

वर्ग पहेली 1341 का हल

गु	ल	जा	री	ला	ल	नं	दा
ल		पा	ना		गा		ता
फा	गु	न		आ	ना		
म	म		म		बु	झा	न
	रा	ज	द		झा		ह
वा	ह		र		ना	पा	क
प		आ	सा	र		र	
स	ह	ज			न	सी	म

एकदा

ईडी को फटकार

तमिलनाडु की खुदरा शराब कंपनी टीएएसएमएसी के खिलाफ धनशोधन की जांच की ईडी की स्वतःस्फूर्त कार्रवाई पर रोक लगाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने बेहद कड़ी टिप्पणी की और यहां तक कह डाला कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) सारी सीमाएं पार कर रहा है और शासन की संघीय अवधारणा का उल्लंघन कर रहा है। राज्य सरकार और टीएएसएमएसी की याचिका पर सुनवाई करते हुए प्रधान न्यायाधीश बी. आर. गवई और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने ईडी की ओर से पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एस. वी. राजू से दो टूक कहा, प्रवर्तन निदेशालय सभी सीमाएं पार कर रहा है। धनशोधन रोकथाम कानून (पीएमएलए) की सख्त धाराओं के दुरुपयोग को लेकर सुप्रीम कोर्ट की कई पीठ पहले भी ईडी को जमकर फटकार लगा चुकी हैं। विपक्षी दल तो ईडी के कथित दुरुपयोग के खिलाफ अक्सर विरोध जताते ही रहते हैं। पीठ ने राज्य सरकार और टीएएसएमएसी की दलीलों पर गौर करते हुए टीएएसएमएसी के खिलाफ जांच पर फिलहाल रोक लगा दी है। तमिलनाडु सरकार और टीएएसएमएसी का तर्क है कि शराब दुकानों के लाइसेंस देने में कथित अनियमितताओं को लेकर हम पहले ही आपराधिक कार्रवाई शुरू कर चुके हैं। 2014 से अब तक इस मामले में 41 प्राथमिकियां दर्ज की जा चुकी हैं और अब ईडी बीच में कूदकर टीएएसएमएसी पर ही छापेमारी कर रही है। इस पर पीठ ने फटकार लगाते हुए ईडी से तीखा सवाल किया कि आप राज्य द्वारा संचालित टीएएसएमएसी पर कैसे छापा मार सकते हैं।

राशिफल

ग्रह स्थिति- सूर्य-वृषभ, चंद्र-मीन, मंगल-वृषभ, बुध-मेष, गुरु-कन्या, शुक्र-मीन

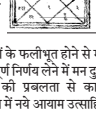

चौघड़िया

09 :03 से 10 :43 तक-चंचल
10 :43 से 12 :23 तक- लाभ
12 :23 से 14 .04 तक- अमृत
20 :24 से 21.44 तक- लाभ

मेष : योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। विरोधियों की प्रबलता से कार्यक्षेत्र में कठिनाइयां संभव। जीविका क्षेत्र में नये आयाम उत्साहित करेंगे।

वृषभ : रोजगार क्षेत्र में नये अवसर उत्साह का संचार करेंगे, परन्तु आवेश में आकर कोई निर्णय न लें। बीती बातों को भूल वर्तमान में जीने की चेष्ठा करें। जीवन साथी का भावनात्मक स्नेह प्राप्त होगा।

मिथुन : किसी बड़ी यात्रा के प्रति मन उत्साहित होगा। दूसरों की सफलता से अपने अन्दर हीन भावना न पालें। नौकरी का वातावरण थोड़ा अरुचिकर हो सकता है। आवेश में लिये गये निर्णय से पश्चाताप संभव।

कर्क : प्रयासरत कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने से मन प्रसन्न होगा। कार्यक्षेत्र में अपनी क्षमताओं का भरपूर लाभ उठाएंगे। किसी विपरीतलिंगी संबंध के प्रति आकषर्ण बढ़ेगा। रोजगार में समस्याओं से हतोत्साहित न हों।

सिंह : नाजुक संबंधों के बीच भावनात्मक तालमेल बिठाने का प्रयत्न करें। नये कार्यों के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। कुछ नये उत्साह व कार्य क्षमता की अनुभूति करेंगे। अच्छी अभिव्यक्ति से संबंध मधुर होंगे।

कन्या : पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव। दूसरों की आलोचना का असर अपने मनोबल पर न पड़ने दें। ग्रहों की अनुकूलता प्रगति के अच्छे अवसर प्रदान करेगी।

तुला : कल्पनाओं में जीना छोड़ भौतिक जगत के अनुकूल चलें। शिक्षा-प्रतियोगिता में परिश्रम तीव्र होगा। कुछ आर्थिक प्रगति के लिए मन नई-नई युक्तियों पर केंद्रित होगा। कुछ नई सफलताएं सुखों का आगाज करेंगी।

वृश्चिक : असीम प्रतिभाओं बावजूद भी हीन मन प्रतिभाओं के लाभ से वंचित करेगा। अतः इसे सुधारें। नैतिक-अनैतिक के बारे में सोचने वाला मन भौतिक परिवेश के साथ तालमेल बिठाने में असमर्थ होगा।

धनु : दूसरों की बात इधर से उधर न करें, अन्यथा छवि धूमिल हो सकती है। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। पारिवारिक संबंधों में कटुता उत्पन्न न होने दें। रोजगार में लाभकारी स्थिति रहेगी।

मकर : अपनी क्षमताओं पर भरोसा रखें, क्योंकि आगे बहुत सारी सफलताएं मिलेंगी। किसी पुराने संबंधी से आकस्मिक भेंट संभव। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति में व्यय संभव।

कुंभ : आकांक्षाएं अपनी सार्थकता हेतु आपको उद्वेलित करेंगी। निर्थक दूसरों की पीठ पीछे आलोचना न करें। राजनीतिज्ञों की सरगर्मियां बढ़ेंगी। मित्रवत संबंधों का लाभ प्राप्त होगा। जीवन साथी के साथ मधुरता बनायें।

मीन : कोई महत्वपूर्ण आकांक्षा अपनी सार्थकता हेतु उद्वेलित करेगी। आपकी सारी समस्याएं खुद सुलझ जाएंगी, थोड़ा धैर्य पूर्वक वक्त का इंतजार करें। किसी नई दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी।

अनाज भंडारण की सस्ती तकनीक

अनाज में नमी का प्रतिशत - किसान भाई इस बात को अच्छी तरह से जान ले कि खाद्यान्न पदार्थ में कीड़ों की प्रकोप के लिए एक निश्चित प्रतिषत में नमी होना आवश्यक है। अनाज भंडारण के समय 8-10 प्रतिशत या इससे कम नहीं कर देने पर खपरा बीटल को छोड़कर किसी भी अन्य कीट का आक्रमण नहीं होता। खपराबीटल (टोगोड़रमा ग्रेनेरियम) कीट 2 प्रतिशत नमी तक भी जिन्दा रहता है, बड़े गोदामों में नमी रोधी संयंत्र लगाना चाहिए। जिससे वर्षात में भी नमी नहीं बढ़े।

गोदामों में कीड़ो की संख्या बढ़ने का कारण

हानिकारक कीटयुक्त गोदाम मे दरारो या पुराने क्षतिग्रस्त बीज मे कीड़ो की अवस्था मौजूद रहती है, खेत मे हुई कीट पकती हुई फसल के बीज पर अण्डे देती है इस प्रकार दानो के साथ भंडारण में कीड़े पहुंच जाते हैं इनमें प्रमुख हैं दालों के भ्रंग, चावल का घुन तथा अन्न का पलभ आदि। खलिहान के आसपास कूड़े करकट में छिपे हुए कीट गहाई के समय दोनों में अण्डे आदि देते हैं, जो भंडारण के समय स्वत: रेंगकर गोदाम में पहुंच जाते है, कीट की अवस्था पुराने बोरे तथा गाड़ियो पर भी मौजूद रहती है, इन सभी के अलावा भंडारण मे होने वाली गुणात्मक और मात्रात्मक क्षति बादाना छेदक, बीटल, पतंगा फफूंदी, पक्षी व नमी आदि से होती है। भारतीय गोदामो के कीट मुख्य रूप से चूहे। गोदामों मे कीड़ो की संख्या बढ़ने के मुख्य कारक निम्नानुसार है।

उपलब्ध ऑक्सीजन

अनाज वायुरोधी भंडारगृह में रखना चाहिए। बीज को जीवित रखने के लिए केवल 1 प्रतिशत ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है तथा कीटों को भी श्वसन हेतु ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। खपराबीटल 16.8 प्रतिशत से कम ऑक्सीजन होने पर आक्रमण नहीं करता है। अर्थात भंडारण में ऑक्सीजन कम करके कीड़ों की रोकथाम की जा सकती है। ऑक्सीजन का प्रसार होने पर कीट अधिक लगते हैं।

तापक्रम

नमी की तरह कीटों के विकास के लिए एक निश्चित तापक्रम की आवश्यकता होती है जो कीटों के अधिक विकास के लिए 28 से 32 डिग्री सेन्टीग्रेड होती है। तापक्रम के पूर्ति के लिए कुछ कीट हीट स्पाट निर्माण करते हैं, इसे रोकने के लिए भंडार गृहों में या तो वायु प्रवेश करा दें या फिर अनाज को उलट-पुलट कर दे। कीड़ो को मार कर उनकी संख्या घटा दे।

अनाज के भंडारण पूर्व प्रबंध

अनाज के मात्रा एव गुणवत्ता को सुरक्षित करने के लिए निम्नलिखित बातो को ध्यान रखना चाहिए।

अनाज की सफाई एवं सावधानिया

अनाज को साफकरके इतना सुखाना चाहिए कि दांत से काटने पर कट की आवाज से साथ टूट जाए अर्थात उसकी नमी 8 से 10 प्रतिशत तक हो जाए। इस प्रकार के अनाज को एक गोदाम में ही रखना चाहिए। इसके अलावा अनाज ढोने वाली गाड़ी की सफाई फिनायल आदि से कर दें।

बोरों की सफाई

भंडारण यदि बोरी में करना हो तो नये बोरों का ही उपयोग करना चाहिए और यदि पुराने बोरे उपयोग करना हो तो 2 मिली मैलाथियान कीटनाशक दवा प्रति लीटर गर्म पानी के घोल में धोकर बोरों को 6 घंटे अच्छी तरह सुखा लें।

गोदाम की सफाई

अनाज के सही रखरखाव के लिए किसान अपनी सुविधा अनुसार धातु की कोठी, कमरे या गोदाम का उपयोग कर सकते हैं, यदि गोदाम मे भंडारित करते है तो गोदाम पक्का, नमी रोधी तथा खिड़की जालीदार और बाहर से खुलने या बंद वाली होना चाहिए। यदि दीवाल या फर्श में छिद्र, दरार आदि हों तो बद कर देवे। चूहे के बिल को सीमेंट मे कांच मिलाकर बंद करना चाहिए तथा अच्छी तरह साफाई करें ताकि चूहे, नमी और कीड़ों से बचाव हो सके। गोदाम को कीट मुक्त करने के लिए 3 कि.ग्रा. लकड़ी का कोयला, 100 ग्राम गंधक को जलाकर प्रति घन मी. की दर से 24 घंटे तक धूमण करें तथा जिस दिन मे दरवाजे, खिड़की, रोशनदान खोल दे जिससे अनाज को हवा लग सके और नमी का असर न हो।

अनाज भंडारण के घरेलू उपाय -

अनाज के नीचे व ऊपर नीम की पत्तियां बिछा दें। बोरों में यदि भंडारण किया जा रहा है तो अनाज मे नीम की पत्तियां मिला ले और जिन बोरियों को भंडारण में उपयोग करना है उनको मैलाथियान 50 ईसी से बोरियों को उपचारित कर लेना चाए यह दवा सुरक्षित कीटनाशक के रूप में उपयोग की जाती है। मिट्टी की कोठी कुठिलों को अच्छी पीली मिट्टी से लीप कर सुखाकर भंडारित करना चाहिए जिससे दवा का आवागमन रूक सके। अनाज को तेज धूप (धूप माह की लू) में सुखाकर भंडारित करें तथा जब पूर्वी नमीयुक्त हवा चल रही हो तो भंडारगृह नहीं खोलें।

दूध संबंधी रोचक बातें

प्रकृति में कुछ सस्तन प्राणी हैं मतलब जिन मादाओं को स्तन होते हैं उन्हें सस्तन प्राणी कहा जाता है। उदा. गाय, भैंस, बकरी, भेड़, बंदरिया, शेरनी, घोड़ी, कुतिया, बिल्ली यह मादाएं प्रसूत (व्याने पर) होने पर उनके अयन में स्थित विशेष अॅलव्हीओलाय पेशियों में 24 घंटे

दूध बनता रहता हैं। यह स्त्राव (दूध) वह अपने नवजात बच्चे को पिलाती हैं। लेकिन प्रसव उपरांत शुरूआती 4-5 दिनों तक थनों से निकलने वाले चिपचिपे पदार्थ को दूध नहीं कहते। उसे खीस या चीका (अंग्रेजी में कोलोस्ट्रम) कहते हैं। इसे पिलाने से नवजात बच्चे के शरीर में रोग-प्रतिरोधी शक्ति पैदा होती है जो उसे कई संक्रमणों से बचाती हैं। अत: जन्म के पश्चात आधे घंटे के भीतर उसे खीस पिलाना निहायत जरूरी होता है। धीरे-धीरे खीस की जगह सामान्य दूध का स्त्रवण शुरू होता है जो गाय में करीब 8-10 महिनों तक शुरू रहता है। दूध पीने से बछड़े को पोषण मिलता है।

दूध में ऐसी कौनसी चीजें होती हैं जिसके कारण उसे पीने वाले बच्चे को पोषण प्राप्त होता है? गाय के दूध में करीब 88 प्रतिशत पानी होता है और शेष 12 प्रतिशत कुल ठोस पदार्थ होते हैं। इसके दो भाग होते हैं जिनमें 3.5 प्रतिशत वसा (फॅट या मलाई) होती हैं तथा 8.5 प्रतिशत वसा विरहित घन पदार्थ होते है। इसमें प्रोटीन, दुग्धशर्करा (यानि लॅक्टोज) खनिज पदार्थ तथा विटामिन्स (यानि जीवनसत्व) होते हैं।

भैंस के दूध में करीब 6 प्रतिशत वसा तथा 9 प्रतिशत वसा विरहित ठोस पदार्थ और 15 प्रतिशत कुल ठोस पदार्थ होते हैं।

दूध में उपस्थित प्रोटीन से शरीर में मौजूद स्नायुओं को ताकत मिलती हैं, शरीर में संप्रेरकों का निर्माण करने में इनकी भूमिका होती है, शरीर की घिसी हुई पेशियां का मरम्मत का कार्य इनसे चलता है।

दूध में उपस्थित लॅक्टोज (यानि दुग्ध शर्करा)से शरीर को ऊर्जा मिलती हैं। खनिजों से हड्डियां मजबूत बनती हैं, रोग प्रतिबंधक शक्ति बरकरार रहती हैं। जीवनसत्व अ बी कॉम्लेक्स, डी,ई तथा के शरीर में विभिन्न कार्य करते है। उदा.जीवन सत्व अ से आंखों का स्वास्थ्य ठीक रहता हैं दृष्टि सामान्य रहती हैं। जीवनसत्व ई तथा के प्रजनन क्षमता को बरकरार रखने में सहायक होते हैं। जीवनसत्व 'बी' काम्लेक्स गुट के राइबोफ्लेबीन शर्करा के चयापचय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इससे ज्ञात होता है कि दूध पीने से स्वास्थ्य पर कई अच्छे प्रबाव होते हैं। हाल ही में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा में हुए अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि देशी गायों के दूध में उपस्थित होता हैं जो बहुत फायदेमंद होता हैं। भारत में ज्यादातर लोग शाकाहारी हैं। अत: उनके लिये दूध में मौजूद प्रोटीन केसीन, लॅक्टोअल्कमीन तथा लॅक्टोग्लोब्लुयीन यही अच्छे प्रोटीन के स्त्रोत हैं।

अक्सर कई लोगों के जेहन में यह प्रश्न उपस्थित होता हैं कि गाय का दूध अच्छा था भैंस का? इसका जवाब यह है कि कम शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्ति, बैठकर ज्यादातर काम करने वाले व्यक्तियों के लिये ज्यादा ऊर्जा की जरूरत नहीं होती और गाय के दूध में वसा की मात्रा कम होती हैं अत: उससे कम उर्जा प्राप्त होती हैं। अत: उनके लिए गाय का दूध पीना अच्छा होता हैं। इसके विपरीत बहुत ज्यादा शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्तियों की शारीरिक ऊर्जा की आवश्यकता ज्यादा होती हैं। अब भैंस के दूध में वसा तथा कुल ठोस पदार्थो की मात्रा ज्यादा होने से उससे अधिक ऊर्जा प्राप्त होती हैं। अत: ज्यादा शारीरिक परिश्रम करने वाले लोगों के लिये भैंस का दूध पीना नुकसानदेह नहीं होगा और वे उसे आसानी से पचा सकते हैं।

अब सवाल यह आता है कि बूढ़े, बीमार व्यक्ति या वे व्यक्ति जिनकी पाचनशक्ति कमजोर हैं उनके लिये कौनसा दूध अच्छा हैं? तो इसका जवाब हैं बकरी का दूध। जी हॉं, क्योंकि इसका मुख्य कारण यह हैं कि बकरी के दूध में वसा के कण अत्वंत महीन(बारीक या छोटे-छोटे) होते हैं जिसकी वजह से उसे पचाना बहुत आसान होता हैं। इसे प्राकृतिक रूप से एकजीव दूध कहा जाता है वह सही है। डेयरी से प्राप्त बोतल का पॉलीथिन थैली में मिलने वाला दूध छना हुआ, कचरायुक्त, पाश्चरीकृत तथा कई बार होमीजिनाइजड, यानी एकजीव किया हुआ होता हैं अत: उसे गर्म करने पर उसकी सतह पर मलाई की परत नहीं जमती। इस दूध की रसायनिक भौतिक तथा सूक्ष्मजीवशास्त्रीय गुणवत्ता बेहतरीन होती हैं। अर्थात् वह दूध मानवी सेवन हेतु सुरक्षित होता हैं। वहीं साफ 'दुग्ध उत्पादन तकनीकी' न अपनाने वाले ग्वाले के दूध में मलाई तो अच्छी मिलेगी लेकिन उसमें कई तरहके सूक्ष्मजीवाणु तथा रोगाणु होने की संभावना रहती हैं।

एनएच पर धारदार तलवार लहराता युवक गिरफ्तार

मनेन्द्रगढ़। सिटी कोतवाली मनेंद्रगढ़ पुलिस ने राष्ट्रीय राजमार्ग सिद्धबाबा घाट स्थित हनुमान मंदिर के पास हाथ में धारदार हथियार लेकर लहरा रहे एवं आने-जाने वालों को परेशान कर रहे युवक को गिरफ्तार कर उसके पास से धारदार हथियार जब्त किया है। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस को देखकर आरोपी एनएच-43 रोड से सिद्धबाबा मंदिर की ओर जाने वाले रास्ते पर भागने लगा। उसके हाथ में धारदार गुप्तीनुमा तलवार था। आरोपी को घेराबंदी कर पकड़ा गया। आरोपी वार्ड क्र. 3 केंद्रीय विद्यालय के पीछे रेलवे कॉलोनी मनेंद्रगढ़ निवासी 38 वर्षीय राजेंद्र महतो पिता स्व. रमेश के पास से गुप्तीनुमा देशी तलवार जब्त कर 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत आरोपी को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ अपराध पंजीबद्ध किया गया।

अहिल्याबाई होलकर जी की 300वीं जयंती पर गोष्ठी एवं सम्मान समारोह संपन्न, लोकमाता अहिल्याबाई का जीवन राजधर्म, लोककल्याण एवं न्याय प्रियता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण-पवन साय

कोरिया बैकुण्ठपुर - जिला मुख्यालय स्थित सिनेपलेक्स में पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की ३००वीं जयंती के अवसर पर गोष्ठी एवं सम्मान समारोह कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम पश्चात अतिथियों ने लोक माता अहिल्याबाई होलकर के छायाचित्र पर दीप प्रज्जवलित एवं पुष्पांजली अर्पित किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय, स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल, भरतपुर-सोनहत विधायक रेणुका सिंह, जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, पूर्व जिलाध्यक्ष कृष्णबिहारी जायसवाल, जिला उपाध्यक्ष शैलेष शिवहरे, राजेश सिंह, जिला महामंत्री पंकज गुप्ता, विनोद साहू, जिला मंत्री बसंत राय, जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित पैकरा, जिला पंचायत उपाध्यक्ष वंदना राजवाड़े, नगर पालिका अध्यक्ष नविता शिवहरे, नगर पंचायत अध्यक्ष गायत्री सिंह, जनपद पंचायत अध्यक्ष आशादेवी सोनपाकर, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष धर्मवती राजवाड़े, जगदीश साहू, कार्यक्रम संयोजक द्वय कपिल जायसवाल, शारदा गुप्ता उपस्थित रहें।

प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय ने संबोधित करते हुए कहा कि, न्याय, धर्म व संस्कृति की संरक्षिका अहिल्याबाई होल्कर जी ने न केवल देश में अनेकों प्रमुख तीर्थों का जीर्णोद्धार किया बल्कि लोक कल्याण की दिशा में भी अपना अहम योगदान देते हुए नारी शक्ति के मजबूत नेतृत्व की मिसाल बनी। उन्होंने कहा कि, ऐसे आयोजन आने वाली पीढ़ियों को अपने इतिहास और संस्कारों से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल ने कहा कि, लोकमाता अहिल्याबाई होलकर का संपूर्ण जीवन समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। उनका न्यायप्रिय, सेवा-भाव और महिला सशक्तिकरण की दिशा में किया गया कार्य आज भी प्रासंगिक है। भरतपुर-सोनहत विधायक रेणुका सिंह ने कहा कि, भारत के इतिहास में अहिल्याबाई होलकर जैसी महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है, उन्होंने दिखा दिया कि नेतृत्व केवल सत्ता में नहीं, सेवा और समर्पण में होता है। जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी ने लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की ३००वीं जयंती पर जिले स्तर पर २१ से ३१ मई तक संपन्न हुए कार्यक्रम की वृत प्रस्तुत किया, उन्होंने कहा कि अहिल्याबाई होलकर का जीवन हमें सिखाता है कि सेवा और निष्ठा से किया गया कार्य समाज में अमिट छाप छोड़ता है, उनके विचार आज भी जनसेवा का मूल मंत्र है। अहिल्याबाई के विचारों से युवा पीढ़ी को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में मंच संचालन जिला महामंत्री पंकज गुप्ता एवं शारदा गुप्ता ने किया।

इस कार्यक्रम में विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों की प्रतिष्ठितजनों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से जिला कोषाध्यक्ष अशोक जायसवाल, जिला मंत्री चुन्नी पैकरा, जिला सह मीडिया प्रभारी तीरथ राजवाड़े, मंडल अध्यक्ष अनिल खटिक, मनैजर राजवाड़े, संजय चिकनजूरी, दीपा विश्वकर्मा, किशोर सिरदार, रामलखन यादव, राजाराम राजवाड़े, मनोज साहू, सुरेश राजवाड़े, रवि त्रिपाठी, रमन गुप्ता, सचिन गुप्ता, मुन्ना चक्रधारी, रिता यादव, सत्यम साहू, सचिदानंद द्विवेदी, सुरेश सिदार, दिनेश साहू, सुशीला साहू, राकेश पैकरा, सुभाष साहू, ईश्वर राजवाड़े, संगीता गुप्ता, मंजू जिवनानी, धीरेन्द्र साहू, रामप्रताप मरावी, मीरा सोनी, चन्द्रकली राजवाड़े, ललिता यादव, पुष्पा राजवाड़े, लालो बाई, रंजीत मंडल, सतेन्द्र राजवाड़े, रोशन राजवाड़े, मनोज सोनवानी, रमेश तिवारी, हरिओम साहू, संतोष राजवाड़े, राकेश गुप्ता, राजेश सोनी सहित भारी संख्या में कार्यकर्ता एवं समाज के प्रमुख लोग उपस्थित थे।

न्यूज गैलरी

हैंडपंपों की मरम्मत से ग्रामीणों को मिली स्वच्छ जल सुविधा

मनेन्द्रगढ़ (अम्बिकावाणी समाचार)। गर्मियों में पानी की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग ने ग्राम पंचायत बरबसपुर में हैंडपंपों की मरम्मत का कार्य तेजी से पूरा किया है। इस पहल के तहत सभी खराब पड़े हैंडपंपों को दुरुस्त कर पुनः चालू किया गया, जिससे ग्रामीणों को अब स्वच्छ पेयजल की सुविधा आसानी से मिलने लगी है। विकासखंड मनेंद्रगढ़ अंतर्गत स्थित बरबसपुर गांव में लंबे समय से जल संकट की समस्या बनी हुई थी, लेकिन विभाग द्वारा की गई त्वरित और समयबद्ध कार्रवाई के बाद अब ग्रामीणों को पानी के लिए भटकना नहीं पड़ रहा है। हैंडपंपों के पुनः संचालन से गांव में जल संकट काफी हद तक कम हुआ है। गांववासियों ने विभाग की इस पहल की सराहना करते हुए आभार प्रकट किया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस कार्य से न केवल उन्हें राहत मिली है, बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में जल संकट से निपटने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। विभाग के अधिकारियों का कहना है कि आगामी दिनों में अन्य ग्रामीण इलाकों में भी इसी प्रकार की मरम्मत व सुविधाओं का विस्तार किया जाएगा, ताकि हर गांव तक स्वच्छ जल पहुंच सके।

शिवपुर चरचा पालिका पालिका अध्यक्ष की जनहितकारी पहल .....सब्जी बाजार में लगाए वाटर कूलर

कोरिया चरचा - कालरी झ नगर पालिका शिवपुर के युवा अध्यक्ष अरुण जायसवाल जनहित में निरंतर सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में भीषण गर्मी को देखते हुए उन्होंने एक सराहनीय पहल करते हुए दैनिक सब्जी बाजार जहां साप्ताहिक बाजार भी लगता है इस जगह में ठंडे पेयजल की व्यवस्था कराई है। इस पहल के तहत बाजार में व्यवसाय करने वाले दुकानदारों, बाहर से आने वाले ग्रामीणों एवं स्थानीय नागरिकों के लिए वाटर कूलर लगाए गए हैं। इस व्यवस्था से भीषण गर्मी में लोगों को राहत मिल रही है। खासकर दैनिक सब्जी बाजार के व्यापारियों ने इस जनसेवी कार्य की सराहना करते हुए पालिका अध्यक्ष अरुण जायसवाल के प्रति आभार प्रकट किया है। गौरतलब है कि इससे पूर्व भी गर्मी के मौसम में स्थानी नागरिकों की जरूरत को देखते हुए अध्यक्ष अरुण जायसवाल ने अपने निजी संसाधनों से नगर पालिका क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में निःशुल्क पेयजल वितरण की व्यवस्था की थी इस अवसर पर श्री जायसवाल ने कहा कि भविष्य में भी ऐसे जनहितकारी कार्यों की योजना बनाई जा रही है, जो अब तक शिवपुर क्षेत्र में कभी नहीं हुए। इन योजनाओं का लाभ प्रत्यक्ष रूप से स्थानीय नागरिकों को मिलेगा ,नगर पालिका अध्यक्ष की इस पहल ने न केवल गर्मी में राहत दी है, बल्कि एक प्रेरणादायक उदाहरण भी प्रस्तुत किया है कि जनप्रतिनिधि अपने दायित्वों के प्रति संवेदनशील होकर कैसे आम जनता की सेवा कर सकते हैं। सब्जी बाजार में सार्वजनिक शौचालय की सुविधा..... पालिका अध्यक्ष अरुण जायसवाल ने अपने अल्प समय के कार्यकाल में छोटे व्यवसायों के लिए बेहतर प्रयास किए हैं दैनिक सब्जी बाजार साप्ताहिक बाजार क्षेत्र में आने वाले व्यापारियों, ग्रामीणों को शौचालय की सुविधा नहीं मिलती थी किंतु इन समस्याओं के समाधान के तहत पालिका अध्यक्ष के कार्यकाल में सार्वजनिक शौचालय प्रारंभ हुआ शौचालय प्रारंभ होने से सबसे ज्यादा सुविधा बाजार में आने वाली महिलाओं को हुई जिनका पहले मजबूरी में खुले में जाना पड़ता था इससे उन्हें काफी शर्मिंदगी भी महसूस होती थी किंतु इन सब बातों का संज्ञान लेकर पालिका अध्यक्ष ने सराहनीय पहल करते हुए शौचालय प्रारंभ कराया देखना यह है कि वर्ष २०२५ में पालिका अध्यक्ष के द्वारा और कौन से कार्य कराए जाते हैं।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल को भेंट की गई जैविक 'सोन हनी' और 'कोरिया मोदक' लड्डू

कलेक्टर श्रीमती चन्दन त्रिपाठी ने दी स्थानीय पहल की जानकारी

कोरिया बैकुंठपुर - कोरिया जिले में जैविक शहद उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक अनूठी पहल की जा रही है।

इसी क्रम में गत दिनों छत्तीसगढ़ शासन के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल को कोरिया जिले की कलेक्टर श्रीमती चन्दन त्रिपाठी ने जिले में उत्पादित 'सोन हनी' (शहद) की बॉटल के साथ स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा तैयार की गई 'कोरिया मोदक' लड्डू और 'कोरिया आचार' भी भेंट की।

इस अवसर पर मंत्री श्री जायसवाल को कलेक्टर श्रीमती त्रिपाठी ने जानकारी दी कि वह 'सोन हनी' स्थानीय किसानों द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), बैकुण्ठपुर के तकनीकी सहयोग से तैयार किया जा रहा है। जिले का पर्यावरण जैविक शहद उत्पादन के लिए अत्यंत अनुकूल है और यहाँ के किसानों को मधुमक्खी पालन के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य किसानों को आय के नए साधन उपलब्ध कराना है ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

कलेक्टर ने यह भी बताया कि मधुमक्खी पालन न केवल ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध करवा रहा है, बल्कि स्वास्थ्यवर्धक जैविक उत्पादों की उपलब्धता को भी बढ़ा रहा है। उन्होंने यह विश्वास जताया कि 'सोनहनी' (शहद) आने वाले समय में जिले की एक विशिष्ट पहचान बनेगा।

कलेक्टर श्रीमती ने यह भी जानकारी साझा की कि स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा गर्भवती महिलाओं के लिए पौष्टिक 'कोरिया मोदक' लड्डू तैयार की जा रही है और आंगनबाड़ी केंद्रों व पोषण संगवारी के माध्यम से गर्भवती महिलाओं को नियमित वितरण किया जा रहा है ताकि गर्भ में पल रहे नवजात को भरपूर प्रोटीन, आयरन मिल सके और जन्म के समय शिशु का वजन दो से ढाई किलो हो सके। इस अवसर पर भरतपुर- सोनहत विधानसभा क्षेत्र की विधायक श्रीमती रेणुका सिंह को भी 'सोनहनी (शहद)' बॉटल, कोरिया मोदक लड्डू व कोरिया आचार भेंट की गई।

सुशासन तिहार - अंतिम पड़ाव में माड़ीसरई में 965 लोगों की समस्याओं का समाधान

मनेन्द्रगढ़ (अम्बिकावाणी समाचार)। जिले के विकासखंड भरतपुर के ग्राम माड़ीसरई में सुशासन तिहार 2025 के तीसरे चरण के अंतर्गत एक दिवसीय अंतिम पड़ाव शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की शुरूआत छत्तीसगढ़ महतारी की प्रतिमा का दीप प्रज्वलन के साथ हुई। दीप प्रज्वलन के पश्चात जनप्रतिनिधियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मान किया गया।

शिविर में शासन की विभिन्न जनहितैषी योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को दी गई। सभी विभागों से प्राप्त कुल 1040 आवेदनों में से 965 का त्वरित निराकरण किया गया, जबकि शेष 75 आवेदन प्रक्रियाधीन हैं। शिविर में बड़वाही, मेंहदौली, बेला, उदकी, माड़ीसरई, हरचैका, चिड़ौला, करीं, तथा पूंजी के सैकड़ों ग्रामीणों ने भाग लिया। शिविर में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे, जिन्होंने अपने-अपने विभाग से संबंधित चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि राज्य शासन की योजनाओं का क्रियान्वयन कैसे किया जा रहा है और आप इनका लाभ कैसे ले सकते हैं। अधिकारियों ने ग्रामीणों को जल संरक्षण और घरेलू नल कनेक्शन की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। उपस्थित लोगों ने सामूहिक रूप से पानी बचाओ की शपथ ली और जल स्रोतों के संरक्षण हेतु जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया। शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया जिसमें जनपद पंचायत द्वारा पूजा वर्मा, अनामिका यादव, कमला सिंह, कुमारी प्रियंका, मालती देवी बैगा, कल्पना तिवारी, मंगली, विमला अहिरवार, शिवाली सिंह, सीता सिंह एवं पुष्पा को नवीन राशन कार्ड वितरित किए गये।

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर आधिकारिक जानकारी साझा करने पर रोक लगाया कोल इंडिया ने

विभागीय गोपनीय पत्र हो रहा वायरल....

कोरिया चर्चा कालरी। कोल इंडिया के कंपनी सचिव के द्वारा जारी एक पत्र इन दिनों सोशल मीडिया में काफी वायरल हो रहा है जिसमें सोशल मीडिया में विभागीय दस्तावेज, बैठक, कार्य की जानकारी न डालने हेतु निर्देशित किया गया है पत्र में उल्लेखित है कि सीआईएल प्रबंधन के संज्ञान में यह बात आई है कि कुछ कर्मचारी सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर बोर्ड, बैठक आदि से संबंधित आधिकारिक जानकारी और दस्तावेज साझा कर रहे हैं। यह प्रथा गोपनीयता के उल्लंघन के साथ-साथ सभी कर्मचारियों से अपेक्षित व्यावसायिक आचार संहिता के भी खिलाफ है इसलिए, सभी कर्मचारियों को यह सख्त निर्देश दिया जाता है कि वे किसी भी प्रकार की गोपनीय या संवेदनशील आधिकारिक जानकारी या दस्तावेजों को सोशल मीडिया प्लेटफार्मों जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, टेलीग्राम या किसी अन्य डिजिटल माध्यम पर पोस्ट, साझा, टिप्पणी या किसी भी रूप में प्रसारित न करें। पत्र में कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का सख्ती से पालन किया जाना आवश्यक है जैसे कोई भी जानकारी जिसे गोपनीय या आंतरिक के रूप में चिन्हित किया गया है, जैसे कि अप्रकाशित मूल्य संवेदनशील जानकारी, बोर्ड/बोर्ड स्तरीय समितियों की कार्यसूची एवं कार्यवृत्त (मसौदा/ अंतिम/अंश) आदि – इन्हें किसी भी अनधिकृत व्यक्ति या सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि सक्षम प्राधिकारी द्वारा विशेष रूप से अनुमति न दी गई हो। गोपनीयता संबंधी दायित्वों का उल्लंघन स्थिति की गंभीरता के अनुसार अनुशासनात्मक कार्रवाई का कारण बन सकता है। सभी कर्मचारियों को उचित विवेक और सावधानी बरतनी चाहिए तथा संगठन की नैतिकता, प्रतिष्ठा और परिचालन सुरक्षा को सदैव बनाए रखना चाहिए। सीआईएल तथा इसकी अनुषंगी कंपनियों के सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया जाता है कि वे इस विषय में अपनी टीमों को जागरूक करें और सुनिश्चित करें कि इसका सख्ती से पालन हो।

जिला स्तरीय संविदा पद की नियुक्ति हेतु दावा-आपत्ति आज

मनेन्द्रगढ़। घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 का क्रियान्वयन के लिए संचालित नवा बिहान योजना अंतर्गत मनेन्द्रगढ़ जिले में रिक्त पदों पर पदपूर्ति जिला स्तरीय पदों पर महिला संरक्षण अधिकारी की संविदा भर्ती के संबंध में जारी विज्ञापन के दिशा-निर्देशों के अनुरूप जिला स्तरीय महिला संरक्षण अधिकारी 1 स्वीकृत संविदा पद की पूर्ति हेतु प्राप्त आवेदन पत्रों के परीक्षण/मूल्यांकन उपरांत पात्र-अपात्र सूची का प्रकाशन किया जा कर तत्संबंध में अंतिम तिथि 2 जून 2025 तक कार्यालयीन समय में दावा-आपत्ति आमंत्रित की गई है।

चोरों ने पार की अधिवक्ता की बाइक

मनेन्द्रगढ़। झगराखंड थानांतर्गत ग्राम तेंदूडांड में एक अधिवक्ता की बाइक अज्ञात चोरों ने पार कर दी। रिपोर्ट पर पुलिस द्वारा केस दर्ज कर चोरी गई बाइक की पतासाजी की जा रही है। झगराखंड वार्ड क्र. 6 राजा बंगला में निवासरत अधिवक्ता राकेश यादव ने पुलिस में इस आशय की रिपोर्ट दर्ज कराई है कि 30 मई को ग्राम तेंदूडांड में टेलर के घर में शादी समारोह में शामिल होने गए थे। बाइक हीरो स्प्लेंडर प्रो क्रमांक सीजी16सीई3519 को टेलर के घर के सामने खड़ा किया था। शादी कार्यक्रम में शामिल होने के बाद रात्रि करीब पौने 1 बजे बाहर आकर देखा तो बाइक गायब थी।

जिले में वृद्धजनों को समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं संचालित

17 से 31 मई तक विशेष सेवा सप्ताह के दौरान बुजुर्गों का स्वास्थ्य परीक्षण, उपचार और जन-जागरूकता शिविरों का आयोजन

कोरिया बैकुंठपुर - मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रशांत सिंह ने बताया कि जिले में वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य और सम्मान को केंद्र में रखते हुए १७ मई से ३१ मई २०२५ तक वृद्धजन स्वास्थ्य सेवा सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान जिले के समस्त उप स्वास्थ्य केंद्रों, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों, प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर बुजुर्गों के लिए विशेष गतिविधियां आयोजित की गईं।

घर-घर जाकर की गई बुजुर्गों की सेवा - स्वास्थ्य विभाग की टीमों ने घर-घर जाकर सर्वे कार्य करते हुए विशेष रूप से पैरालिसिस से पीड़ित, बिस्तर पर पड़े एवं विकलांग वृद्धजनों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें प्राथमिक उपचार प्रदान किया। इस अभियान में विशेष रूप से बुजुर्गों की बीपी, शुगर, दृष्टिदोष, फिजियोथैरेपी और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं की पहचान कर उन्हें तत्काल परामर्श व इलाज उपलब्ध कराया गया। इस सेवा सप्ताह के दौरान जिले भर में जन-जागरूकता शिविर लगाए गए,

जिनमें बुजुर्गों को नियमित स्वास्थ्य जांच, संतुलित आहार, मानसिक स्वास्थ्य देखभाल एवं पुनर्वास सेवाओं के बारे में जानकारी दी गई। मानसिक तनाव, अकेलापन और डिप्रेशन जैसी समस्याओं पर भी विशेष फोकस करते हुए काउंसलिंग सत्रों का आयोजन किया गया।

यलो कार्ड, आयुष्मान कार्ड और वय वंदना योजना का लाभ - ६० वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को शिविरों के माध्यम से विशेष ओपीडी यलो कार्ड जारी किए गए। साथ ही उन्हें आयुष्मान भारत योजना के गोल्डन कार्ड और वय वंदना योजना से जोड़ते हुए उन्हें आगे स्वास्थ्य सेवाओं के सतत लाभ हेतु पंजीकृत किया गया।

Sports Live

फिट इंडिया, फिट जशपुर के तहत विश्व सायकल दिवस पर निकाली गई सायकल रैली

जशपुर, 01 जून (ए)। विश्व सायकल दिवस के उपलक्ष्य में फिट इंडिया, फिट जशपुर थीम के तहत रविवार प्रातः 7 बजे जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में एक भव्य सायकल रैली का आयोजन किया गया। यह रैली हॉकी स्टेडियम, जशपुर से प्रारंभ होकर बस स्टैंड, पुरानी टोली और महाराजा चौक होते हुए पुनः हॉकी स्टेडियम में समाप्त हुई। इस सायकल रैली का शुभारंभ कलेक्टर रोहित व्यास द्वारा किया गया, जिन्होंने स्वयं सायकल चलाकर उपस्थित जनसमूह को प्रतिदिन सायकल चलाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर जशपुर विधायक रायमुनी भगत भी उपस्थित रहीं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पहले के समय में सायकल आम लोगों की जिंदगी का हिस्सा थी, लेकिन अब मोटर वाहन चलन में आने से लोग शारीरिक रूप से निष्क्रिय होते जा रहे हैं।

उन्होंने नागरिकों से आग्रह किया कि वे अपनी दिनचर्या में सायकल चलाना अवश्य शामिल करें।

जय शाह के ट्रॉफी फोटोशूट के बाद पीएसजी की ऐतिहासिक जीत

0-पहली बार बना चैंपियंस लीग का चैंपियन

म्यूनिख,01 जून। फ्रांसीसी फुटबॉल क्लब पेरिस सेंट-जर्मेन (पीएसजी) ने शनिवार 31 मई को म्यूनिख में इतिहास रच दिया. उन्होंने इटली के फुटबॉल क्लब इंटर मिलान को 5-0 से हराकर अपना पहला चैंपियंस लीग खिताब जीत लिया. यह केवल दूसरी बार था जब एक फ्रांसीसी क्लब ने यूरोपीय कप उठाया हो.

पीएसजी की ये जीत रिकॉर्ड तोड़ अंदाज में हुई, क्योंकि चैंपियंस लीग फाइनल के इतिहास में ये सबसे बड़ी जीत थी. किसी भी टीम ने इससे पहले चार गोल से अधिक के अंतर से यूरोपीय कप फाइनल नहीं जीता था.

पीएसजी की ओर से 19 वर्षीय सनसनी डिजायर डू के दो गोल, अशरफ हकीमी, खविचा क्वारत्सखेलिया और सेनी मायुलु ने एक एक गोल करके अपनी टीम को शानदार जीत दिला दी.

अशरफ हकीमी ने 12वें मिनट में अपने पूर्व क्लब इंटर मिलान के खिलाफ गोल करके शुरूआत की, लेकिन उन्होंने सम्मान दिखाने के लिए अपने पुराने क्लब के खिलाफ जश्न नहीं मनाने का फैसला किया.

इसके ठीक सात मिनट बाद 19 वर्षीय डिजायर डू ने गोल अपना पहला गोल किया और फिर दूसरे हाफ के बीच में एक और गोल करके बढ़त को दोगुनी कर दिया. इस उपलब्धि ने उन्हें 1962 में बेनफिका के यूसेबियो के बाद चैंपियंस लीग फाइनल में दो बार गोल करने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बना दिया.

ख्विचा क्वारत्सखेलिया ने 73वें मिनट में एक शानदार जवाबी हमले के बाद चौथा गोल किया, और फिर सेनी मायुलु ने चार मिनट शेष रहते पांचवां गोल करके जीत पक्की कर दी.

पहली बार ट्रॉफी उठाने के बाद पीएसजी के मिडफील्डर विटिना ने कहा, यह सब कुछ मायने रखता है ! प्रशंसक ही मुख्य कारण हैं कि हम यह ट्रॉफी जीतना चाहते थे. यह हमारा सपना है, यह हर किसी का सपना है. टीम बहुत अच्छी है,और ये परिणाम उसी टीम का नतीजा है, कोई जादू से ये ट्रॉफी नहीं मिली है,

पीएसजी के कोच लुइस एनरिक ने कहा,पहले दिन से ही मैंने कहा कि मैं ये महत्वपूर्ण ट्रॉफी जीतना चाहता हूं, और पीएसजी ने कभी चैंपियंस लीग नहीं जीती. हमने पहली बार ऐसा किया, कई लोगों को खुश करना एक शानदार एहसास है,

पिछले साल दिसंबर में आईसीसी चेयरमैन के तौर पर अपना कार्यकाल शुरू करने के बाद से ही जय शाह क्रिकेट के लिए नए बाजार खोलने और विस्तार करने के लिए दौरे कर रहे हैं. आईसीसी के सबसे युवा चेयरमैन के तौर पर कार्यभार संभालने के तुरंत बाद जय शाह ने 2032 ब्रिस्बेन ओलंपिक और पैरालंपिक आयोजन समितियों के शीर्ष अधिकारियों से मुलाकात की और जनवरी 2025 में आईओसी अध्यक्ष थॉमस बाक से भी मुलाकात की.

अब उन्होंने 30 मई 2025 को चैंपियन लीग 2025 के फाइनल से पहले म्यूनिख में यूएफा के अध्यक्ष एलेक्जेंडर सेफरीन से मुलाकात की और ट्राफी के साथ फोटोशूट भी कराया. अपने एक्स अकाउंट पर शाह ने लिखा, चैंपियन लीग फाइनल से पहले म्यूनिख में क्रिकेट का प्रतिनिधित्व करके और यूएफा के अध्यक्ष एलेक्जेंडर सेफरीन के साथ चर्चा करके सम्मानित महसूस किया. अन्य खेल के लीडरों के साथ समय बिताना हमेशा मूल्यवान होता है, क्योंकि आईसीसी हमारे खेल की वैश्विक पहुंच का विस्तार कर रहा है.

कोहली का मिल गया रिप्लेसमेंट, दोहरा शतक जड़कर चयन को बताया सही

नईदिल्ली ,01 जून। करुण नायर ने शनिवार, 31 मई को इंग्लैंड लायंस के खिलाफ इंडिया ए के मैच में शानदार दोहरा शतक लगाया. सेंट लॉरेंस ग्राउंड, कैंटरबरी में खड़े होकर दर्शकों ने उनकी हौसला अफजाई के लिए तालियां बजाईं. करुण की धमाकेदार पारी ने भारत को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया और टेस्ट क्रिकेट में वापसी के लिए अपने चयन को सही साबित कर दिया.

करुण ने इंग्लैंड के कैंटरबरी में खेले जा रहे पहले अनऑफिशियली टेस्ट मैच में भारत ए और इंग्लैंड लायंस के बीच दूसरे दिन शानदार डबल शतक जड़ा. उन्होंने 281 गेंदों पर 204 रनों की पारी खेली, जिसमें 26 चौके और एक छक्का शामिल है. इस दोहरे शतक के सथा करुण नायर ने 20 जून से लीड्स में शुरू हो रहे इंग्लैंड के पहले टेस्ट के लिए भारतीय टीम की प्लेइंग-11 में अपने चयन को मजबूत किया है.

बता दें कि यह इंडिया ए के लिए उनका पहला 200 से अधिक का स्कोर है लेकिन प्रथम श्रेणी क्रिकेट में उनका चौथा दोहरा शतक है. नायर का ये शानदार प्रदर्शन उनके तीसरे नंबर पर आने के बाद आया है. जिससे अब भारत को नंबर थ्री पर बल्लेबाजी का एक बढ़िया ऑप्शन मिल गया है. क्योंकि कोहली रोहित के जाने के बाद टीम बल्लेबाजी की रैंकिंग को लेकर सस्पेंस अभी भी बना हुआ है. करुण नायर के अलावा ध्रुव जुरेल और टेस्ट स्क्वाड से बाहर सरफराज खान ने भी शानदार पारी खेली है. सरफराज ने 119 गेंदों पर 92 रन बनाए जबकि जुरेल ने 120 गेंदों में 120 गेंदों में 94 रनों की पारी खेली. इन तीनों की धमाकेदार बल्लेबाजी की वजह से इंडिया ए ने दूसरे दिन लंच तक 119 ओवर में 7 विकेट खोकर 533 रन बना लिए है. दिसंबर 2016 में चेन्नई में इंग्लैंड के खिलाफ तिहरा शतक लगाने वाले नायर ने सरफराज खान के साथ 181 रनों की साझेदारी की. उन्होंने उप-कप्तान ध्रुव जुरेल के साथ भी 195 की साझेदारी की. स्टार स्पोर्ट्स ने एक्स पर करुण का विडियो शेयर करके लिखा, हर किसी को दूसरा मौका नहीं मिलता ! लेकिन जब आपको मौका मिले, तो उसका पूरा फायदा उठाएं ! बिल्कुल करुण नायर की तरह !अभिमन्यु ईश्वरन (कप्तान), यशस्वी जयसवाल, करुण नायर, सरफराज खान, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), नितीश कुमार रेड्डी, शार्दुल ठाकुर, हर्ष दुबे, अंशुल कंबोज, हर्षित

एलपीजी की कीमतों में हुआ बदलाव, सिलेंडर 24 रुपये हुआ सस्ता

नई दिल्ली ,01 जून। जून की शुरूआत के साथ ही आम जनता और व्यापारियों के लिए एक राहतभरी खबर सामने आई है। तेल विपणन कंपनियों ने 1 जून से 19 किलोग्राम वाले कमर्शियल एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमत में 24 की कटौती की है। अब दिल्ली में 19 किलो का कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर घटकर 1723.50 रुपये का हो गया है, जो 1747.50 रुपये का मिल रहा था। इसके अलावा कोलकाता में ये 1826 रुपये का, मुंबई में 1674.50 रुपये का और चेन्नई में घटकर 1881 रुपये का हो गया है।

तेल कंपनियां हर महीने की पहली तारीख को एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में संशोधन करती हैं, जो वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों, टैक्स नीतियों और मांग-आपूर्ति जैसे बाजार कारकों पर निर्भर करता है। इस बार की कटौती का फायदा सीधे तौर पर होटल, रेस्टोरेंट और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को मिलेगा, जहां बड़े पैमाने पर एलपीजी की खपत होती है। सिलेंडर की कीमतों में इस कटौती से इन व्यापारियों की परिचालन लागत कुछ हद तक कम होगी, जिससे उन्हें वित्तीय राहत मिलेगी। इसका अप्रत्यक्ष फायदा आम उपभोक्ताओं को भी मिल सकता है, क्योंकि लागत में कमी का असर सेवाओं और खाद्य वस्तुओं की कीमतों पर पड़ सकता है।

छोटी खबरें

आईपीएल क्वालीफायर-2 में आज मुंबई का पंजाब से मुकाबला

0-सेमीफाइनल जैसे मैच से पहले पिच रिपोर्ट, मौसम और संभावित प्लेइंग-11 के बारे में जाने सब कुछ

अहमदाबाद,01 जून। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के दूसरे क्वालीफायर मैच आज यानी 1 जून को मुंबई इंडियंस का मुकाबला पंजाब किंग्स से होगा. ये मैच शाम 7:30 से अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा. इस मैच को जीतने वाली टीम 3 जून को आरसीबी से फाइनल में भिड़ेगी.

मुंबई के हौसले बुलंद होंगे क्योंकि उन्होंने एलिमिनेटर में गुजरात टाइटंस जैसी मजबूत टीम को हराकर इस मैच में प्रवेश किया है, जबकि पंजाब वापसी करना चाहेगी क्योंकि उन्हें क्वालीफायर-1 में आरसीबी से हार का सामना करना पड़ा था.

पंजाब किंग्स यकीनन इस सीजन में दो सर्वश्रेष्ठ टीमों में से एक रही है, लेकिन उनका सामना एक ऐसे प्रतिद्वंद्वी से है जो अपने सबसे खतरनाक रूप में है. मुंबई इंडियंस ने इस सीजन के शुरू में अपने पांच में से पहले चार मैच हारने के बाद, टूनार्मेंट के दूसरे हाफ में शानदार टीम प्रदर्शन की बदौलत आज फाइनल में पहुंचने से महज एक कदम दूर है. रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव की अगुआई वाली एमआई की बल्लेबाजी ने शानदार प्रदर्शन करना शुरू कर दिया है. यहां तक कि तिलक वर्मा, जो इस सीजन में काफी हद तक खराब फॉर्म में हैं, ने भी अच्छा प्रदर्शन करना शुरू कर दिया है. बुमराह की अगुआई में गेंदबाजी शानदार तरीके से चल रही है. यहां तक कि उनके नए विदेशी खिलाड़ी जॉनी बेयरस्टो और रिचर्ड ग्लीसन-जो कि मूल रूप से अस्थायी प्रतिस्थापन हैं-भी पिछले मैच में शानदार प्रदर्शन करके सबको हैरान कर दिया. मुंबई इंडियंस के लिए बुरी खबर ये है कि जिस मैदान पर आज का मैच खेलना है वो उनको सूट नहीं करता, इसलिए वो अब तक इस मैदान पर लगातार पांच मैच हार चुके हैं, उन्होंने यहां छह मैचों में से केवल एक मैच जीता है. वहीं पंजाब के लिए शायद राहत की बात ये है कि वे नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेल रहे हैं, जहां से टीम का शानदार प्रदर्शन शुरू हुआ था. इंडियन प्रीमियर लीग के अपने पहले मैच में, किंग्स ने 5 विकेट पर 243 रन बनाए और गुजरात टाइटन्स को 11 रनों से हराकर अपने सीजन की शानदार शुरूआत की. जिसको वो एक बार फिर से दोहराना चाहेंगे. पांच बार के चैंपियन मुंबई इंडियंस की टीम सितारे और अनुभवी खिलाडि?ों से भरी पड़ी है. उनकी टीम में रोहित शर्मा, जॉनी बेयरस्टो , सूर्यकुमार यादव, तिलक वर्मा, हार्दिक पंड्या (कप्तान), मिशेल सेंटनर, ट्रेंट बोल्ट और जसप्रीत बुमराह जैसे बड़े खिलाड़ी शामिल हैं, जो कि अपने दम पर मैच को बदलने की क्षमता रखते हैं. वहीं दूसरी ओर पंजाब किंग्स की टीम में ज्यादातर युवा खिलाड़ी हैं, और उन्होंने अपने बारह खिलाडि?ों में छह अनकैप्ड भारतीयों को शामिल किया है. जिसमें प्रभसिमरन सिंह, प्रियांश आर्य, नेहल वढेरा, शशांक सिंह, विजयकुमार वैश्य और हरप्रीत बराड़ के नाम शामिल हैं. इस लिए पोंटिंग और अय्यर को मुंबई इंडियंस से मुकाबला करने के लिए एक रणनीति तैयार करनी होगी, एक ऐसी टीम जो किसी भी परिदृश्य और स्थिति को संभालने के लिए तैयार दिखती है. किंग्स ने निश्चित रूप से इस सीजन में निडर क्रिकेट खेला है, यहां तक कि उन्होंने एक बार एमआई को हराया भी है, लेकिन क्वालीफायर 2, जो वास्तव में सेमीफाइनल है, एक पूरी तरह से अलग चुनौती पेश करता है. ऐसे बड़े मैच में अनुभव का बहुत महत्व होता है.

दोनों टीमों के हेड टू हेड रिकॉर्ड की बात करें तो अब तक खेले गए 32 मुकाबले में मुंबई ने 17 बार बाजी मारी है जबकि पंजाब के 15 मैच में जीत मिली है. क्वालीफायर-2 की बात करें तो में एमआई का रिकॉर्ड 2-2 है जबकि पंजाब इससे पहले केवल एक बार - 2014 में क्वालीफायर-2 में शामिल हुआ था, जहां उन्होंने चेन्नई को 24 रनों से हराया था. किसी भी टीम में चोट की कोई चिंता नहीं है. मुंबई दीपक चाहर और सूर्यकुमार यादव की मांसपेशियों में खिंचाव लग रहा था, लेकिन बताया जा रहा है कि वह पंजाब के खेल के लिए पूरी तरह से फिट हैं. वहीं पंजाब किंग्स के लिए युजवेंद्र चहल के बारे में कोई खबर नहीं है, जो पिछले मैच में नहीं खेल पाए थे. इसका मतलब है कि मुंबई के खिलाफ होने वाले मुकाबले में उनके उपलब्ध नहीं होने की संभावना है.

------------------------------ व्यापार/फिल्म ------------------------------

धारावी रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट के मास्टर प्लान से बेहतर इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ लोगों को मिलेगा उच्च स्तरीय जीवन

नई दिल्ली ,01 जून। धारावी रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट (डीआरपी) धारावीकरों के जीवन और रहने-काम करने की स्थितियों को बदलने का एक अनूठा अवसर है, जिसका लक्ष्य बेहतरीन इन्फ्रास्ट्रक्चर और सार्वजनिक सुविधाओं के साथ उच्च गुणवत्ता का जीवन स्तर प्रदान करना है।

प्रस्तावित मास्टर प्लान धारावीकरों के लिए एक विश्व स्तरीय जिला बनाने और मुंबई के लिए एक नए दिल की कल्पना करने का एक प्रयास है।

धारावी मास्टर प्लान तीन मार्गदर्शक सिद्धांतों की नींव पर बनाया गया है, जिसमें रीडेवलपमेंट के माध्यम से आर्थिक परिवर्तन को आगे बढ़ाना, मजबूत इकोसिस्टम और इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण करना और एक समतापूर्ण धारावी को बढ़ावा देना शामिल है।

धारावी मास्टर प्लान में ग्रीन और पब्लिक स्पेस का एक अच्छा मिश्रण है, जिसमें बड़े सिटी पार्क से लेकर छोटे कम्युनिटी प्ले ग्राउंड भी शामिल हैं। इससे लोगों को वॉकिंग के लिए खुली जगह मिलेगी और इससे जीवन स्तर में भी सुधार आएगा।

धारावी के केंद्र में एक बड़े सक्रिय सार्वजनिक खुले स्थान की योजना बनाई गई है, जो न केवल निवासियों की मनोरंजन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करेगा, बल्कि संपूर्ण मुंबई शहर की भी आवश्यकताओं को पूरा करेगा, जहां धारावी और मुंबई निवासी उत्सवों और त्योहारों के लिए एक साथ आ सकेंगे।

धारावी का एक उच्च ट्रांजिट सिस्टम भी होगा, जिसमें निर्बाध मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी होगी। साथ ही इसके केंद्र से होकर एक नया मेट्रो कॉरिडोर भी गुजरेगा। बस फीडर सिस्टम, गैर-मोटर चालित परिवहन के लिए समर्पित इन्फ्रास्ट्रक्चर और एक बढि?ा स्ट्रीट नेटवर्क लास्ट माइल की कनेक्टिविटी को बढ़ाएगा और सभी इलाकों में पैदल चलने की सुविधा को बढ़ावा देगा।

धारावी के मध्य में एक मल्टी-मॉडल ट्रांजिट हब (एमएमटीएच) की योजना बनाई गई है, जिसमें पहली बार ऐसी सुविधा होगी, जहां एक ही स्थान पर सिटी बस और अन्य शहरी परिवहन के अलावा इंटर-सिटी, इंट्रा-सिटी, उपनगरीय, मेट्रो, हाई-स्पीड और एयरपोर्ट एक्सप्रेस ट्रेनों की सुविधा उपलब्ध होगी।

इसके अतिरिक्त धारावी और एमएमआर के अन्य स्थानों पर अत्याधुनिक अस्पताल नेटवर्क स्थापित किए जाएंगे। साथ ही धारावी में पॉलीक्लिनिक, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र और डायग्नोस्टिक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी। इससे मध्य मुंबई में चिकित्सा संबंधी इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूती मिलेगी। धारावी रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट में प्रस्तावित वाटरफ्रंट विकास और धारावी सैरगाह के तहत नदी के किनारे तक पहुंच बनाने के लिए एक रेखीय खुली जगह की योजना बनाई गई है। सैरगाह लोगों के लिए एक ऐसी जगह होगी, जहां वे आकर मीठी नदी के किनारे सैर का आनंद ले सकेंगे और उत्तर की ओर मैंग्रोव वन को देख सकेंगे।

यह युवा और वृद्ध सभी के लिए एक हैंगआउट स्थान के रूप में काम करेगा और लोगों को एक साथ आने, बातचीत करने और सामाजिककरण करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। यह संभवतः क्वीन्स नेकलेस (मरीन ड्राइव) के बाद शहर का सबसे लंबा वाटरफ्रंट होगा। प्रस्तावित सड़क नेटवर्क में मौजूदा विकास योजना (डीपी) सड़कों को चौड़ा करना और लगभग 21 किलोमीटर लंबी सड़क का नया नेटवर्क शामिल है। प्रस्तावित सड़क नेटवर्क में 9 मीटर, 12 मीटर, 15 मीटर, 18 मीटर, 21 मीटर, 24 मीटर, 27 मीटर और 36 मीटर की अलग-अलग राइट ऑफ वे (आरओडब्ल्यू) चौड़ाई है, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करती है। विभिन्न समुदायों के लिए विश्व स्तरीय मानकों वाले प्रतिष्ठित धार्मिक परिसरों को बनाया जा रहा है, जिससे धारावी के सभी निवासियों को अपने निवास स्थान के निकट अपने धार्मिक परिसर तक आसानी से पहुंच मिल सके।

केंद्र ने इंडिगो को टर्किश एयरलाइंस के साथ विमान लीज समझौता खत्म करने का दिया निर्देश

नई दिल्ली ,01 जून। पाकिस्तान का समर्थन करने के लिए तुर्की को कड़ा संदेश देते हुए केंद्र सरकार ने शुक्रवार को इंडिगो एयरलाइन को टर्किश एयरलाइंस के साथ अपने विमान लीज समझौते को तीन महीने के भीतर खत्म करने का निर्देश दिया। इंडिगो ने टर्किश एयरलाइंस से दो बोइंग 777 विमान पट्टे पर ले रखे हैं, जिसके लिए उसे 31 मई तक की अनुमति थी। कंपनी ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय से इस अनुमति को छह महीने तक बढ़ाने की मांग की थी। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, मंत्रालय ने अब इसकी अनुमति देने से इनकार कर दिया है। हालांकि, मंत्रालय की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि उड़ान में तत्काल व्यवधान के कारण यात्रियों को होने वाली असुविधा से बचने के लिए इंडिगो को 31 अगस्त तक तीन महीने का विस्तार दिया गया है। मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया कि इसे आगे नहीं बढ़ाया जाएगा।

इंडिगो को इन किराए के विमानों के लिए 31 अगस्त 2025 तक तीन महीने की आखिरी और अंतिम विस्तार अवधि दी गई है। यह अनुमति एयरलाइन के इस वादे के आधार पर दी गई है कि वह इस अवधि में टर्किश एयरलाइंस के साथ किराए का समझौता खत्म कर देगी

भारत में आएगी ये किफायती इलेक्ट्रिक कार

नई दिल्ली ,01 जून। भारत में इस साल कई नई इलेक्ट्रिक कारें लॉन्च होने की तैयारी में हैं। कंपनियों का अब किफायती इलेक्ट्रिक वाहनों पर भी ध्यान केंद्रित है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, रेनो इंडिया जल्द ही भारतीय बाजार में एक सस्ती इलेक्ट्रिक कार लॉन्च कर सकती है, जो कि ्य2द्बस्त्र का इलेक्ट्रिक वर्जन हो सकती है।

हाल ही में स्टिंग के दौरान देखा गया है। लॉन्च होने के बाद यह कार टाटा टियागो और जैसी किफायती इलेक्ट्रिक कारों को टक्कर देगी। उम्मीद है कि भारतीय बाजार में सबसे सस्ती इलेक्ट्रिक कार भी साबित हो सकती है। हालांकि, रेनो ने अभी तक के स्पेसिफिकेशन्स का आधिकारिक खुलासा नहीं किया है, लेकिन माना जा रहा है कि यह इस साल के अंत तक लॉन्च हो जाएगी।

यह पहली बार नहीं है जब को टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है, लेकिन नई रिपोर्ट्स में इसके डिजाइन से जुड़ी कुछ जानकारियां सामने आई हैं। इस महीने की शुरूआत में श्वङ्क की पूरी स्पाई इमेज सामने आई थी, और अब इसके रियर डिजाइन के बारे में पता चला है। इसमें ङ्ख-आकार के टेल लैंप के साथ एक साफ-सुथरा रियर डिजाइन दिया गया है। स्पॉट की गई एंट्री-लेवल वैरिएंट हो सकती है, क्योंकि इसमें स्टील के व्हील्स देखे गए हैं।

कई आधुनिक फीचर्स शामिल किए जा सकते हैं, जिनमें 10.1 इंच का इंफोटेनमेंट टचस्क्रीन, 7 इंच का पूरी तरह से डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, हाइट-एडजस्टेबल स्टीयरिंग व्हील और ई-शिफ्ट गियर लीवर शामिल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, इसमें वायरलेस स्मार्टफोन मिररिंग की सुविधा भी मिल सकती है, जो एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले दोनों को सपोर्ट करेगी। इस कार में व्हीकल-टू-लोड फंक्शन भी दिया गया है, जिससे अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को चार्ज किया जा सकेगा। ्य2द्बस्त्र श्वङ्क में दो स्क्च चार्जिंग पोर्ट और 308 लीटर का बूट स्पेस मिलेगा। एक्सेसरी के तौर पर इसमें वैकल्पिक 35 लीटर का फ्रंट ट्रंक (फ्रंक) भी उपलब्ध हो सकता है, जिससे स्टोरेज क्षमता और बढ़ जाएगी।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में उपलब्ध की तरह, 26.8 की बैटरी दी जा सकती है। उम्मीद है कि यह भी दो वेरिएंट में आएगीः इलेक्ट्रिक 45 और इलेक्ट्रिक 65। इलेक्ट्रिक 45 मॉडल 19.1 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकता है और इसकी अधिकतम गति 78 किमी प्रति घंटा है। वहीं, टॉप मॉडल इलेक्ट्रिक 65 केवल 13.7 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकता है और इसकी टॉप स्पीड भी 78 किमी प्रति घंटा है। दोनों ही श्वङ्क वेरिएंट एक बार चार्ज करने पर लगभग 225 किलोमीटर की रेंज दे सकते हैं।

■ RNI No.CHHHIN/ 9479/2002 ■ Postal Regn No./RYPDN/11/2014-16 अम्बिकावाणी

शराब घोटाला मामले में विजय भाटिया दिल्ली से गिरफ्तार, जेल गए एक दिन के लिए जेल

रायपुर। छत्तीसगढ़ शराब घोटाला मामले में ईओडब्ल्यू-एसीबी की टीम ने शराब कारोबारी विजय भाटिया को दिल्ली से गिरफ्तार कर रायपुर लाया गया रविवार को स्पेशल कोर्ट में पेश किया। ईओडब्ल्यू ने 14 दिन की रिमांड मांगी लेकिन जज ने उसे एक दिन के लिए जेल में रहने के आदेश दिए क्योंकि स्पेशल कोर्ट में पावर नहीं होने की वजह से एक दिन के लिए जेल भेजा गया। सोमवार को फिर भाटिया को कोर्ट में पेश कर ईओडब्ल्यू पूछताछ के लिए रिमांड मांगेगी। इसके पूर्व ईओडब्ल्यू की टीम ने दुर्ग-भिलाई में भाटिया के 6 ज्यादा ठिकानों पर छापा मारा है,कार्रवाई चल रही है। बता दें गिरफ्तारी से बचने भाटिया काफी अरसे से फरार थे।

न्यूज गैलरी

पत्रकारिता विवि में हॉस्टल छात्र-छात्राओं के बीच बवाल

रायपुर। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय में देर रात जमकर बवाल हुआ है। यहां छात्राओं ने हॉस्टल में रहने वाले छात्रों पर गाली-गलौच करने और अश्लील कमेंट्स करने का आरोप लगाया है। इस घटना के बाद छात्राओं में आक्रोश है। मिली जानकारी के अनुसार, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय में बॉयज और गर्ल्स हॉस्टल है। दोनों ही हॉस्टल में छात्र और छात्राएं रहती है। बीती रात छात्रावास में रहने वाले छात्र छात्राओं को गालियां देने लगे और अश्लील कमेंट्स करने लगे। इतना ही छात्राओं का आरोप है कि, छात्रों ने खिड़कियों से झांककर गंदे और अश्लील इशारे भी किए। इस मामले में छात्राओं ने बताया कि, ऐसी घटना पहली बार नहीं हो रही है। छात्र पहले भी ऐसी हरकत कर चुके हैं और उन्होंने इस बात की शिकायत विश्वविद्यालय में की थी। छात्राओं ने आगे कहा कि, हमने कई बार इस बात की शिकायत की है, लेकिन छात्रों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाती। इतना ही नहीं छात्राओं ने बताया कि, बवाल खत्म होने के कई घंटो बाद हॉस्टल की केयर टेकर मौके पर पहुंची थी। फिलहाल छात्राओं ने इस पूरे मामले की शिकायत की है। वहीं विवि प्रशासन से पक्ष लेने का प्रयास किया गया पर संपर्क नहीं हो पाया। अभी उनकी ओर से मामले पर कोई अधिकृतबयान नहीं आया है।

हेरोइन बेचते 2 तस्कर गिरफ्तार

रायपुर। रायपुर में नशीला पदार्थ हेरोइन बेचते दो तस्कर गिरफ्तार हुए हैं। आरोपी नशीले सामान बेचने के लिए ग्राहक की तलाश कर रहे थे, इस बात की भनक पुलिस को लग गई। पुलिस ने घेराबंदी करके आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों के पास से 1.49 लाख का माल जब्त किया गया है। पुलिस ने नारकोटिक्स मामले में आरोपियों को जेल भेज दिया है।

तिल्दा के अब्रसिव प्लांट में करंट से मजदूर की मौत, मुआवजे को लेकर हंगामा

रायपुर। रायपुर जिले के तिल्दा-नेवरा के पास ग्राम पंचायत छपोरा भींभौरी स्थित गुरुदेव अब्रसिव प्लांट में मजदूर की करंट लगने से मौत हो गई। घटना प्लांट में 31 मई को मोटर की मरम्मत करते समय हुई थी। 23 साल के हर्ष यादव ने मौके पर दम तोड़ दिया था। मुआवजे की मांग को लेकर परिजनों व ग्रामीणों ने हंगामा कर दिया, पुलिस के साथ झूमाझटकी होने पर कुछ लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार भी किया। प्रशासन घटना की सूक्ष्मता से पड़ताल प्रारंभ कर दी है।

पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी से 7 कर्मियों की विदाई

रायपुर। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी डंगनिया मुख्यालय के भारप्रेषण कक्ष में 7 कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति पश्चात विदाई दी गई। इस अवसर पर पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री राजेश कुमार शुक्ला ने सेवानिवृत्तजनों को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृतिचिन्ह भेंट कर उनके सुखमय जीवन की कामना की। उन्होंने कहा कि तीन से चार दशकों तक तक सेवा करने वाले बिजली कर्मियों के पास बहुमूल्य अनुभव की पूंजी है। उनके योगदान से उपभोक्ता संतोष के लक्ष्य को हम प्राप्त कर रहे हैं। आज सेवानिवृत्त कर्मचारियों में भिलाई से वरिष्ठ पर्यवेक्षक श्री हरिनंदन मंडल, कनिष्ठ पर्यवेक्षक श्री राजेंद्र कुमार तिवारी, लाइन सहायक श्रेणी-2 श्री श्याम लाल निषाद, श्री राजेश कुमार चिंदेकर, रायपुर से श्री नेहरू बेहरा, दफ्तरी एवं जगदलपुर से श्री चैतराम नाग, भृत्य शामिल हैं।

चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रीय समाज के केन्द्रीय महाधिवेशन में शामिल हुए मुख्यमंत्री

00 चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रीय समाज का है गौरवशाली अतीत, छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य बनाने में सामाजिक संस्थाओं की है महत्वपूर्ण भूमिका - साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रीय समाज का अतीत गौरवशाली रहा है। समाज में छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे प्रतापी शासक हुए, वहीं सरदार वल्लभभाई पटेल जैसी महान विभूतियाँ हुईं, जिन्होंने देशी रियासतों के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ का चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रीय समाज न केवल परिश्रम और स्वाभिमान का प्रतीक है, बल्कि यह समाज छत्तीसगढ़ के विकास का आधार स्तंभ भी है। छत्तीसगढ़ को नई दिशा और विकसित राज्य बनाने में इस समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। मुख्यमंत्री साय आज दुर्ग जिले के ग्राम कोलिहापुरी में आयोजित चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रीय समाज के केन्द्रीय महाधिवेशन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा तथा विधायक श्री अजय चन्द्राकर, श्री गजेन्द्र यादव एवं श्री ललित चन्द्राकर विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

मुख्यमंत्री श्री साय ने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ में चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रीय समाज के अधिकांश लोग मूल रूप से किसान हैं और व्यापक स्तर पर कृषि कार्य से जुड़े हैं। प्रदेश सरकार किसान भाइयों के चेहरों पर हमेशा खुशी देखना चाहती है। सरकार लगातार किसान भाइयों की बेहतरी के लिए कार्य कर रही है। इस समय विकसित कृषि संकल्प अभियान छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में 29 मई से 12 जून 2025 तक चल रहा है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिकों को किसानों से सीधे जोड ?ा और नई कृषि तकनीकों, सरकारी योजनाओं तथा सफल कृषि मॉडलों की जानकारी देना है। कृषि वैज्ञानिकों के 100 समूह छत्तीसगढ़ के विभिन्न इलाकों में किसानों से संवाद कर रहे हैं। ये वैज्ञानिक किसानों को ऑर्गैनिक खेती, खाद और सॉयल हेल्थ कार्ड के सही उपयोग के बारे में जागरूक कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि छत्तीसगढ़ का हर किसान तकनीकी रूप से सक्षम हो और उनकी आय में वृद्धि हो।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रदेश में खेती-किसानी तभी मजबूत होगी जब किसान भाइयों को उनकी उपज की सही कीमत मिलेगी। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विधानसभा चुनाव के समय गारंटी दी थी कि प्रदेश में सरकार बनने पर किसानों को दो साल का बकाया बोनस दिया जाएगा। इसे पूरा करते हुए हमने किसानों के खातों में सरकार बनते ही राशि अंतरित की। मोदी जी की गारंटी के अनुरूप छत्तीसगढ़ में किसानों से 3,100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से 21 क्विंटल प्रति एकड़ के मान से धान खरीदी की जा रही है। बीते खरीफ सीजन में राज्य में 149 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान खरीदी का नया रिकॉर्ड बना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को उनकी उपज की पूरी कीमत मिल रही है। धान खरीदी के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं, जिससे प्रदेश में खेती के प्रति किसानों का रुझान बढ़ रहा है। प्रदेश में सिंचाई के संसाधनों को बढ़ावा देने के साथ-साथ पशुपालन और मत्स्य पालन को भी प्राथमिकता दी जा रही है। दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए गरीब परिवारों को दो-दो दुधारू पशु दिए जाएंगे, जिनकी देखभाल की जिम्मेदारी राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड को सौंपी गई है। किसानों को दूध बेचने में कोई परेशानी न हो, इसके लिए दुग्ध एकत्र करने के लिए भी व्यवस्था की गई है। मुख्यमंत्री ने बताया कि दंतेवाड़ा जिले में मिलेट्स (कोदो, कुटकी और रागी) की खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रोसेसिंग संयंत्र की स्थापना की जा रही है। यह अनाज पहले गरीबों का भोजन माना जाता था, लेकिन अब यह पोषणयुक्त होने के कारण उच्च वर्ग में भी लोकप्रिय हो रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमने नई औद्योगिक नीति बनाई है, जिसमें प्रदेश की जरूरत के हिसाब से उद्योग की स्थापना के लिए अनेक प्रावधान किए गए हैं। हमारी सरकार का संकल्प है - सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास। इसी भावना से हम समाज के हर वर्ग के लिए योजनाएँ बना रहे हैं और उन्हें कार्यरूप में परिणत कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि छत्तीसगढ़ में किसानों, महिलाओं, बुजुर्गों और समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए अनेक योजनाएँ लागू की गई हैं। महतारी वंदना योजना के तहत 70 लाख से अधिक महिलाओं को प्रति माह 1,000 रुपये की आर्थिक सहायता दी जा रही है। इससे महिलाएँ आत्मनिर्भर बन रही हैं और सिलाई, कढ़ाई, सब्जी उत्पादन जैसे कार्यों से अपनी आमदनी बढ़ा रही हैं। मुख्यमंत्री तीर्थयात्रा योजना को एक बार फिर शुरू किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि रामलला दर्शन योजना के तहत अब तक 22,000 से अधिक श्रद्धालु लाभान्वित हो चुके हैं। उन्होंने अवगत कराया कि सुशासन तिहार में छत्तीसगढ़ के सभी 33 जिलों का दौरा किया। योजनाओं की जमीनी स्तर पर मॉनिटरिंग की और जनता जनार्दन से फीडबैक लिया। तीन चरणों में संपन्न सुशासन तिहार में 40 लाख से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिनका निराकरण किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सरकार प्रशासनिक पारदर्शिता और डिजिटल व्यवस्था की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रही है। अब जमीन की रजिस्ट्री के तुरंत बाद नामांतरण की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, जिससे आम जनता को राहत मिली है। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अधिकांश कार्य ऑनलाइन किए जा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में सरकार ने विशेष ध्यान दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन और समाज को बेहतर बनाने का जरिया है। प्रदेश में आईआईटी, आईआईआईटी, लॉ यूनिवर्सिटी और मेडिकल कॉलेज जैसे प्रमुख संस्थान स्थापित किए गए हैं। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत सरकार बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने और उन्हें समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनाने का कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कुर्मी समाज की सराहना करते हुए कहा कि यह समाज उन्नत कृषक और व्यापारी समाज है, जो छत्तीसगढ़ के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह समाज न केवल खेती और व्यापार में अग्रणी है, बल्कि शिक्षित और संगठित भी है। उन्होंने आग्रह किया कि विकसित छत्तीसगढ़ की परिकल्पना को साकार करने में सभी सामाजिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जब कोई समाज मजबूत होता है तो उससे पूरा राष्ट्र मजबूत होता है। शिक्षा, सेवा और जागरूकता से ही समाज और राष्ट्र का सशक्त निर्माण संभव है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा ने कहा कि समाज को जोड़कर सही मार्ग दिखाने वालों का समाज में हमेशा सम्मान होता है। आज समाज की नई पीढ़ी को संस्कारवान बनाने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम को विधायक श्री अजय चन्द्राकर, श्री ललित चन्द्राकर और बीज विकास निगम के अध्यक्ष श्री चन्द्रहास चन्द्राकर ने भी संबोधित किया। चन्द्रनाहू क्षत्रीय कुर्मी समाज के प्रदेश अध्यक्ष श्री विनोद चन्द्राकर ने स्वागत उद्बोधन में केन्द्रीय महाधिवेशन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर चन्द्रनाहू क्षत्रीय कुर्मी समाज के पदाधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

प्रकृति और संस्कृति दोनों को बचाने की जरूरत - पैकरा

0 प्लास्टिक से प्रकृति का दम घुट रहा है - अपर प्रधान मुख्य वन सरंक्षक, 0 पर्यावरण महोत्सव में पर्यावरण सरंक्षण पर चर्चा हुई

00 प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने के लिए दृढ़ संकल्पित होने की जरूरत... ब्रह्माकुमारी सविता

रायपुर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विधानसभा रोड स्थित शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में पर्यावरण दिवस पर परिचर्चा आयोजित की गई। कार्यक्रम में वन विकास निगम के अध्यक्ष राम सेवक पैकरा, वन विभाग के अपर प्रधान मुख्य वन सरंक्षक (वन्य जीवन) प्रेम कुमार और ब्रह्माकुमारी भावना दीदी ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने की। चर्चा का विषय था -पर्यावरण सरंक्षण और हमारा दायित्व। इस अवसर पर बोलते हुए वन विकास निगम के अध्यक्ष राम सेवक पैकरा ने कहा कि प्रकृति ने हमें बहुमूल्य सम्पदा के रूप में अनेक उपहार दिए हैं। एक ओर विकास हो रहा है तो दूसरी ओर विनाश हो रहा है। प्रकृति को प्रदूषित करने के लिए हम सब दोषी हैं। प्राकृतिक वन को हमने उजाड़ा है। वन सरंक्षण के लिए लोगों में जन जागृति लाने की जरूरत है। हमें प्रकृति और संस्कृति दोनों को बचाने के लिए कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि हमारा प्रदेश नदी-नालों और जंगलों से घिरा हुआ है। उन्हें सरंक्षित करने की आवश्यकता है। प्राकृतिक असन्तुलन के कारण हमें अतिवृष्टि और अनावृष्टि का सामना करना पड़ रहता है। इसी प्रकार खेती में रसायनिक खेती को छोड़कर जैविक खेती को अपनाने की जरूरत है। वन विकास निगम ने इस वर्ष औद्योगिक क्षेत्रों में 15 से 18 लाख वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा है। अपर प्रधान मुख्य वन सरंक्षक (वन्य जीवन) प्रेम कुमार ने कहा कि वर्तमान समय प्रदूषण इतना विकराल रूप ले चुका है कि हरेक को अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी समझने की जरूरत है। आजकल प्लास्टिक बहुत बड़ी समस्या बन चुका है। इससे प्रकृति का दम घुट रहा है। हर साल हम तिरालिस लाख टन प्लास्टिक कचरा धरती और नदियों में हम डाल रहे हैं। प्लास्टिक का कुछ अंश हमारे ब्लड में भी घुल चुका है। उन्होंने कहा कि अगर जीवन में खुशी चाहते हैं तो अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनका संवर्धन करें। लोग जंगलों में घूमने जाते हैं तो प्लास्टिक वहीं छोड़कर आ जाते हैं जिसको हिरन आदि जानवर खाकर मर रहे हैं। हमें अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

रायपुर केन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने कहा कि प्रकृति ने हमारी जरूरत के मुताबिक सब कुछ दिया है लेकिन जब हम लोभवश उसका अत्यधिक दोहन करने लगते हैं तब समस्या शुरू होती है। हमें पानी की कीमत तब पता चली जब वह बोतल में बिकने लगा। इसी प्रकार आक्सीजन का महत्व हमें कोविड के दौरान पता चली। आज दृढ़ संकल्पित होने की जरूरत है कि हम प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे। अपने साथ एक खाली कपड़े की थैली जरूर रखें। इससे पहले ब्रह्माकुमारी भावना दीदी ने कहा कि जल, जंगल, जमीन और जानवरों की सुरक्षा से ही पर्यावरण सरंक्षण संभव है। उन्होंने बतलाया कि प्रकृति के साथ-साथ मन के प्रदूषण को भी खत्म करने की जरूरत है। किसी के घर में मृत्यु होने पर उसके नाम से एक पेड़ जरूर लगाएं। इस अवसर पर वन विकास निगम के अध्यक्ष रामसेवक पैकरा और अपर प्रधान मुख्य वन सरंक्षक प्रेमकुमार ने शान्ति सरोवर में वृक्षारोपण भी किया।

जल्द बंद होगा कुम्हारी टोल प्लाजा, केंद्रीय मंत्री गडकरी ने दिया आश्वासन

रायपुर। रविवार को नागपुर में परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से पूर्व विधायक विकास उपाध्याय ने मुलाकात कर कुम्हारी टोल प्लाजा बंद कराए जाने की मांग को लेकर विस्तृत चर्चा करते हुए नियम कंडिका का हवाला देते हुए बताया कि 60 किलोमीटर के दायरे में दो टोल प्लाजा का संचालन नहीं होना चाहिए लेकिन छत्तीसगढ़ में इन नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही है। कुम्हारी टोल प्लाजा के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में अन्य भी ऐसे टोल प्लाजा है जो 60 किलोमीटर के दायरे के अंतर्गत आते हैं और किस प्रकार इन अवैध टोल प्लाजा का संचालन हो रहा है। केंद्रीय मंत्री गडकरी ने आश्वासन दिया कि हम बहुत जल्द कुम्हारी टोल प्लाजा को बंद कर देंगे एवं छत्तीसगढ़ के अन्य टोल प्लाजा की भी जानकारी मंगा कर उस पर भी निर्णय लेंगे। उपाध्याय ने बताया कि विगत कई वर्षों से लगातार कुम्हारी टोल प्लाजा को बंद करने की मांग को लेकर आंदोलन किए जा रहे हैं और इन इस आंदोलनों में सहभागिता के लिए सत्ता पक्ष के सांसदों से भी सहयोग की मांग की गई थी। अगर शीघ्र बंद करने का निर्णय नहीं किया गया तो दिल्ली स्थित जंतर मंतर और गडकरी नागपुर निवास में प्रदर्शन किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ में होगी शिक्षकों की भर्ती, प्रथम चरण में 5,000 पदों पर होगी नियुक्ति

रायपुर। छत्तीसगढ़ में शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ एवं प्रभावशील बनाने के लिए शिक्षकों के रिक्त पदों पर चरणबद्ध भर्ती की जाएगी। प्रथम चरण में 5,000 शिक्षकों की भर्ती होगी। इस निर्णय से प्रदेश के शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययन अध्यापन व्यवस्था को गति मिलेगी और विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त होगी। शिक्षकों के रिक्त पदों पर भर्ती को लेकर विभागीय स्तर पर तैयारियां प्रारंभ कर दी गई हैं। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा राज्य में शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण पहल की जा रही है। इन्हीं पहल में शामिल है शालाओं एवं शिक्षकों का युक्तियुक्तकरण। युक्तियुक्तकरण की प्रक्रिया राज्य में शुरू कर दी गई है। इसके पूरा होने के बाद शिक्षकों के रिक्त पदों का आकलन कर नई भर्ती की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

गौरतलब है कि शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच को बेहतर बनाने की पहल के तहत छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा राज्य में शालाओं और शिक्षकों का युक्तियुक्तकरण किया जा रहा है। इसका उद्देश्य यह है कि जहां जरूरत है वहां शिक्षक उपलब्ध हों और बच्चों को अच्छी शिक्षा, बेहतर शैक्षणिक वातावरण और बेहतर सुविधाएं मिल सकें। युक्तियुक्तकरण का मतलब है स्कूलों और शिक्षकों की व्यवस्था को इस तरह से सुधारना कि सभी स्कूलों में छात्र-शिक्षक अनुपात संतुलित हो और कोई भी स्कूल बिना शिक्षक के न रहे। राज्य की 30,700 प्राथमिक शालाओं में औसतन 21.84 बच्चे प्रति शिक्षक हैं और 13,149 पूर्व माध्यमिक शालाओं में 26.2 बच्चे प्रति शिक्षक हैं, जो कि राष्ट्रीय औसत से कहीं बेहतर है। हालांकि 212 प्राथमिक स्कूल अभी भी शिक्षक विहीन हैं और 6,872 प्राथमिक स्कूलों में केवल एक ही शिक्षक कार्यरत है। पूर्व माध्यमिक स्तर पर 48 स्कूलों में शिक्षक नहीं हैं और 255 स्कूलों में केवल एक शिक्षक है। 362 स्कूल ऐसे भी हैं जहां शिक्षक तो हैं, लेकिन एक भी छात्र नहीं है। इसी तरह शहरी क्षेत्र में 527 स्कूलों में छात्र-शिक्षक अनुपात 10 या उससे कम है। 1,106 स्कूलों में यह अनुपात 11 से 20 के बीच है। 837 स्कूलों में यह अनुपात 21 से 30 के बीच है। लेकिन 245 स्कूलों में यह अनुपात 40 या उससे भी ज्यादा है, यानी छात्रों की दर्ज संख्या के अनुपात में शिक्षक कम हैं। युक्तियुक्तकरण के अंतर्गत जिन स्कूलों में ज्यादा शिक्षक हैं लेकिन छात्र नहीं, वहां से शिक्षकों को निकालकर उन स्कूलों में भेजा जा रहा है, जहां शिक्षक नहीं हैं। इससे शिक्षक विहीन और एकल शिक्षक वाले स्कूलों की समस्या दूर होगी। स्कूल संचालन का खर्च भी कम होगा और संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सकेगा। एक ही परिसर में ज्यादा कक्षाएं और सुविधाएं मिलने से बच्चों को बार-बार एडमिशन लेने की जरूरत नहीं होगी। यानी एक ही परिसर में संचालित प्राथमिक, माध्यमिक, हाई स्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूल संचालित होंगे तो प्राथमिक कक्षाएं पास करने के बाद विद्यार्थियों को आगे की कक्षाओं में एडमिशन कराने की प्रक्रिया से छुटकारा मिल जाएगा। इससे बच्चों को पढ़ाई में निरंतरता बनी रहेगी। बच्चों के स्कूल छोडने. की दर (ड्रॉपआउट रेट) भी घटेगी। अच्छी बिल्डिंग, लैब, लाइब्रेरी जैसी सुविधाएं एक ही जगह देना आसान होगा। शिक्षा विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार शालाओं के युक्तियुक्तकरण के तहत राज्य के कुल 10,463 स्कूलों में से सिर्फ 166 स्कूलों का समायोजन होगा। इन 166 स्कूलों में से ग्रामीण इलाके के 133 स्कूल ऐसे हैं, जिसमें छात्रों की संख्या 10 से कम है और एक किलोमीटर के अंदर में दूसरा स्कूल संचालित है। इसी तरह शहरी क्षेत्र में 33 स्कूल ऐसे हैं, जिसमें दर्ज संख्या 30 से कम हैं और 500 मीटर के दायरे में दूसरा स्कूल संचालित है। इस कारण 166 स्कूलों को बेहतर शिक्षा के उद्देश्य से समायोजित किया जा रहा है, इससे किसी भी स्थिति में बच्चों की पढ़ाई प्रभावित नहीं होगी। शेष 10,297 स्कूल पूरी तरह से चालू रहेंगे। दरअसल छत्तीसगढ़ सरकार राज्य के शहरी और ग्रामीण इलाकों में शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए स्कूलों और शिक्षकों का युक्तियुक्तकरण यानि तर्कसंगत समायोजन कर रही है। इसका उद्देश्य यह है कि जहां जरूरत ज्यादा है, वहां संसाधनों और शिक्षकों का बेहतर ढंग से उपयोग सुनिश्चित हो। उन स्कूलों को जो कम छात्रों के कारण समुचित शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं, उन्हें नजदीकी अच्छे स्कूलों के साथ समायोजित किया जाए, ताकि बच्चों को बेहतर माहौल, संसाधन और पढ़ाई का समान अवसर उपलब्ध हो सके। शालाओं और शिक्षकों के युक्तियुक्तकरण से बच्चों को ज्यादा योग्य और विषय के हिसाब से विशेषज्ञ शिक्षक मिलेंगे। स्कूलों में लाइब्रेरी, लैब, कंप्यूटर आदि की सुविधाएं सुलभ होंगी। शिक्षकों की कमी वाले स्कूलों में अब पर्याप्त शिक्षक मिलेंगे। जिन स्कूलों में पहले गिनती के ही छात्र होते थे, वे अब पास के अच्छे स्कूलों में जाकर बेहतर शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में इस बदलाव से शिक्षा का स्तर सुधरेगा। छत्तीसगढ़ सरकार की मंशा है कि हर बच्चे को अच्छी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।यह पहल राज्य की शिक्षा व्यवस्था को ज्यादा सशक्त और संतुलित बनाएगी। युक्तियुक्तकरण से न सिर्फ शिक्षकों का समुचित उपयोग होगा, बल्कि बच्चों को बेहतर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी मिल सकेगी।

किराए के मकान में पकड़ाए 3 लड़कियां, संचालक-संचालिका गिरफ्तार

रायपुर। काफी समय से भाटागांव के इटालिया हाउस के किराए के मकान में देह व्यापार की शिकायत मिल रही थी, जिस पर पुलिस ने 1500 रुपये देकर एक युवक को ग्राहक बनाकर किराए के मकान में भेजा और कुछ भी गलत होने पर मिस कॉल कर इशारा देने को कहा, वहीं जब ग्राहक बनकर युवक मकान के अंदर गया और कुछ देर में उसने पुलिस को मिस कॉल कर देह व्यापर की सूचना दी, जिसपर पुलिस ने मकान को चारों ओर से घेर लिया और दरवाजा खुलाया, अंदर से चार लड़कियां मिली जिससे उनका नाम पता पूछने पर अपना नाम रुषा खरे पति धनउ खरे उम्र 38 वर्ष निवासी अंबेडकर नगर पेंड्रावन थाना सरसीवा जिला सारंगढ़ बिलाईगढ़, धनेश्वरी मरकाम पति ध्रुव मरकाम उम्र 34 वर्ष निवासी ग्राम महुआ टिकरा जमगला सरगुजा, बिंदिया सिधार पिता विदुर सिदार उम्र 20 वर्ष निवासी बेलाडुला जैजैपुर जांजगीर चांपा और सीताबाई बरेठ पति राजू बरेठ 37 वर्ष निवासी रायगढ़ तिरोड़ीमल नगर को गिरफ्तार किया।

रूषा खरे की तलाशी लेने पर उसके कब्जे से पांईटर दीपक मिश्रा द्वारा देह व्यापार करने के लिए दिए 500-500 का तीन नोट कुल 1500 तथा रुषा के बैग एवं घर के कमरों से दो नग उस्ताद कंपनी का साबूत कंडोम 5 नग, कंडोम का फटा रेपर एवं 07 नग उपयोग हुआ कंडोम बरामद कर समक्ष गवाह के जब्त किया गया। अन्य तीन लड़कियों का कथन लेने पर बताएं कि रुषा खरे काम दिलाने वह अधिक पैसा मिलने के नाम पर रायपुर लाकर जबरदस्ती देह व्यापार कराने लगी। इस प्रकार आरोपीगण डेविड व रुषा खरे के विरुद्ध अपराध क्रमांक 224/2025 धारा धारा 4.5.7 अनैतिक व्यापार निवारण अधिनियम 1956 पंजीबद्ध कर आरोपिया रूषा खरें को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया।

■ स्वामी, मुद्रक प्रकाशक- महेन्द्र सिंह टुटेजा, नरेन्द्र सिंह टुटेजा द्वारा निर्माण ऑफसेट, आदर्श नगर डॉ. भीमराव अंबेडकर वार्ड (मोवा थाना के सामने) मोवा रायपुर से मुद्रित कर वेलकम टॉवर, शंकर नगर फ्लैट नम्बर बी-1 से प्रकाशित ■ प्रधान संपादक -महेन्द्र सिंह टुटेजा, प्रबंध संपादक - नरेन्द्र सिंह टुटेजा, Mo. 8223000155, 94252 56303, 98261 83780 ■ Email- raipurambikavani@gmail.com